नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 397, नई दिल्ली, सोमवार 06 अप्रैल 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत का फल और समस्या का हल, देर से ही सही लेकिन मिलता जरूर है।

03 अंक 5 अंक ज्योतिष में बुध (Mercury) की शक्ति

06 विशेषज्ञों की कमी: बच्चों को एआई के लिए कैसे तैयार किया जाए

08 राजा सरायकेला का भैरव समक्ष ऐतिहासिक पूजा के साथ विश्व प्रसिद्ध सरायकेला

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मिलेंगी एयरपोर्ट जैसी सुविधाएं, QR कोड से होगी एंट्री; 1500 AI कैमरे रखेंगे नजर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य शुरू हो गया है, जहां एयरपोर्ट जैसी आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी। सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन के लिए 1500 AI-आधारित CCTV कैमरे लगाए जाएंगे। कर्मचारियों और वेंडरों को QR कोड वाले पहचान पत्र मिलेंगे, जबकि यात्रियों को QR कोड आधारित टिकट से ही स्टेशन में प्रवेश मिलेगा।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य शुरू हो जाएगा। एयरपोर्ट की तरह यहां यात्रियों को सुविधाएं उपलब्ध होगी। आधुनिक सुविधाओं के साथ ही भीड़ प्रबंधन व सुरक्षा के लिए भी आधुनिक उपकरण लगेंगे। पूरे परिसर में 1500 एआइ आधारित सीसीटीवी कैमरे लगेंगे। इससे स्टेशन परिसर के प्रत्येक कोने पर नजर रखी जाएगी।

स्टेशन पर तैनात रेलकर्मियों, ठेकेदार के माध्यम से काम करने वाले अन्य कर्मियों के साथ ही वेंडर्स को भी क्यूआर कोड वाले पहचान पत्र और जैकेट दी जाएगी। बिना टिकट कोई स्टेशन परिसर में प्रवेश नहीं कर सकेगा। पूरी योजना को लागू करने का ब्लू प्रिंट तैयार किया जा रहा है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को पुनर्विकास कार्य की समीक्षा की।

कर्मियों और वेंडर्स को अलग-अलग रंग के जैकेट मिलेंगे

उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर बताया कि पुनर्विकास कार्य तेजी से चल रहा है। स्टेशन पर यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं मिलेगी। यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए एआइ वाले कैमरे लगेंगे। इससे संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान करने में मदद मिलेगी। स्टेशन पर तैनात कर्मियों और वेंडर्स को अलग-अलग रंग के जैकेट दिए जाएंगे जिससे कि उनकी पहचान हो सके। स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल के जवानों की संख्या भी बढ़ाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को भारत टैक्सी सेवा से जोड़ा जाएगा ताकि यात्रियों को स्टेशन से बाहर निकलते ही आसानी से टैक्सी उपलब्ध हो सके। स्टेशन परिसर में नए और स्पष्ट साइनेज लगाए जाएंगे जिससे यात्रियों को प्लेटफार्म, प्रवेश व निकास द्वार, स्टेशन पर उपलब्ध सेवाओं की आसानी से जानकारी मिल सके।

क्यूआर कोड आधारित प्रवेश की व्यवस्था

नई दिल्ली स्टेशन पर क्यूआर कोड आधारित प्रवेश की व्यवस्था करने की तैयारी है। इसके लिए टिकट पर क्यूआर कोड होगा जिससे यात्री को प्लेटफार्म पर जाने की अनुमति मिल सकेगी। इस व्यवस्था से बिना टिकट वाले यात्रियों को रोका जा सकेगा। इससे भीड़ प्रबंधन और असमाजिक तत्वों को स्टेशन में जाने से रोकने में मदद मिलेगी।

अधिकारियों ने कहा कि रेल मंत्री ने पुनर्विकास कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया है। वह नियमित रूप से निर्माण कार्य का निरीक्षण कर उसकी समीक्षा करते हैं।

आगामी 14 अप्रैल को प्रधानमंत्री कर सकते हैं दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन...

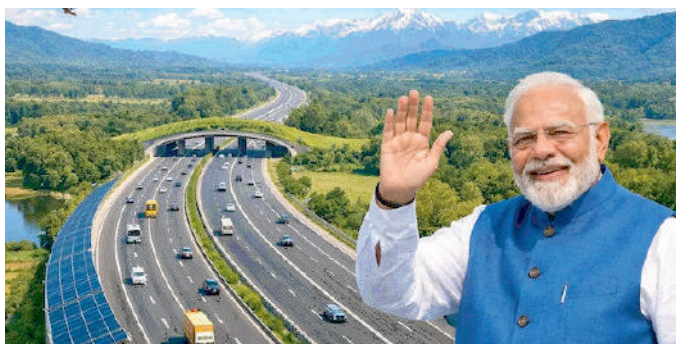

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन आगामी 14 अप्रैल को PM मोदी कर सकते हैं, दिल्ली अक्षरधाम से लेकर देहरादून तक करीब 210 किलोमीटर लंबा 6 लेन एक्सप्रेस-वे के उद्घाटन समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के शामिल होने की भी उम्मीद जताई जा रही है। उद्घाटन से पहले गणेशपुर में हेलीपैड और तमाम तरह की अन्य व्यवस्थाएं दुरुस्त की जा रही है, मंडलायुक्त सहारनपुर डीआईजी, डीएम और एसएससी द्वारा 2 दिन पहले यहां पहुंच कर व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया गया है। (सूत्र)

दूर होगी निजामुद्दीन स्टेशन पर भीड़ की समस्या

एलिवेटेड होल्डिंग एरिया और स्काईवॉक बनाने की तैयारी

सराय काले खां की ओर से हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पहुंचने वाले यात्रियों को भीड़ और संकरी सड़क से होने वाली परेशानी जल्द दूर होगी। रेलवे प्रशासन और नगर निगम के बीच भूमि विवाद के कारण यात्री सुविधाओं में बाधा आ रही थी। अब रेलवे ने एलिवेटेड होल्डिंग एरिया और स्काईवॉक बनाने का निर्णय लिया है। इससे ढाई लाख यात्रियों को सुविधा मिलेगी और प्लेटफॉर्म पर भीड़ प्रबंधन में भी मदद मिलेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सराय काले खां की तरफ से हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पहुंचने में यात्रियों को होने वाली परेशानी दूर होने की उम्मीद है। रिंग रोड से स्टेशन परिसर के बीच संकरी सड़क व उसके दोनों ओर लगी अस्थायी दुकानों से यात्रियों को भारी परेशानी होती है।

समस्या का मुख्य कारण भूमि को लेकर विवाद है। स्टेशन परिसर के बाहर की भूमि नगर निगम की है। इस कारण उस भूमि का रेलवे प्रशासन यात्री सुविधा के लिए उपयोग नहीं कर सकता है। इसके समाधान के लिए रेलवे एलिवेटेड होल्डिंग एरिया और एफओबी बनाने की तैयारी कर रहा है।

ढाई लाख यात्री पहुंचते हैं हजरत निजामुद्दीन स्टेशन

नई दिल्ली व पुरानी दिल्ली के बाद हजरत निजामुद्दीन राजधानी का सबसे महत्वपूर्ण व भीड़-भाड़ वाला रेलवे स्टेशन हैं। वंदे भारत, गतिमान, राजधानी सहित प्रतिदिन लगभग दो सौ ट्रेनों का यहां से संचालन होता है और ढाई लाख के करीब यात्री पहुंचते हैं।

इसमें बड़ी संख्या में लोग सराय काले खां की तरफ से आते-जाते हैं। मुख्य भवन और उसके बाहर पर्याप्त स्थान होने के कारण यात्रियों को परेशानी नहीं होती है। परंतु, सराय काले खां की तरफ जगह की कमी है। इस तरफ सराय काले खां बस अड्डा, पिंक लाइन मेट्रो स्टेशन और नमो ट्रेन स्टेशन है।

ट्रैवलेटर वाला स्काई वॉक तैयार किया गया

नमो ट्रेन स्टेशन से सीधे रेलवे स्टेशन में पहुंचने के लिए ट्रैवलेटर वाला स्काई वाक तैयार किया गया है। लेकिन, बस, अन्य वाहनों और मेट्रो से आने वाले यात्रियों को संकरी सड़क से होकर स्टेशन परिसर में आना पड़ता है। संकरी सड़क पर आटो व कैब जाम में फंसे रहते हैं। पैदल चलने वाले यात्रियों को भी परेशानी होती है।

सराय काले खां की तरफ बने स्टेशन भवन में भी पर्याप्त स्थान नहीं है। इस कारण यहां अधिक यात्री नहीं रूक सकते हैं। सभी को प्लेटफार्म पर जाना पड़ता है। इससे प्लेटफार्म पर भी भीड़ बढ़ जाती है। स्टेशन भवन और प्लेटफार्म पर भीड़ प्रबंधन की समस्या होती है। इससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। सबसे अधिक परेशानी बुजुर्ग व बीमार यात्रियों को होती है।

रेलवे प्रशासन व नगर निगम के बीच बातचीत चल रही

भूमि उपलब्ध कराने को लेकर पिछले कई वर्षों से रेलवे प्रशासन व नगर निगम के बीच बातचीत चल रही थी। रेलवे इस भूमि के बदले अन्य स्थान पर नगर निगम को भूमि उपलब्ध कराने का प्रस्ताव भी रखा था। अभी तक इसे लेकर अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। इस कारण रेलवे प्रशासन ने अब एलिवेटेड होल्डिंग एरिया बनाने का निर्णय किया है।

साथ ही स्काई वाक भी बनेगा जिससे रिंग रोड व मेट्रो स्टेशन से आने वाले पैदल यात्रियों की परेशानी दूर रहोगी। शीघ्र ही इसका प्रस्ताव तैयार कर रेल मंत्री को भेजा जाएगा। होल्डिंग एरिया बनने से प्लेटफार्म पर भीड़ रोकने में मदद मिलेगी। ट्रेन का इंतजार करने वाले यात्रियों को भी सुविधा होगी।

संगठन की ताकत से ही बदलेगा ई-रिक्शा सेक्टर का भविष्य

"संगठन ही राष्ट्र की प्रमुख शक्ति होता है" यह बात आज पूरे भारत के ई-रिक्शा सेक्टर पर पूरी तरह सटीक बैठती है। हर राज्य में हजारों ई-रिक्शा चालक, डीलर और निर्माता अपनी आजीविका के लिए इस क्षेत्र पर निर्भर हैं, लेकिन संगठित प्रयासों की कमी के कारण उनकी समस्याएं लगातार बनी हुई हैं।

ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने में देरी, समय समय पर ई-रिक्शा का रजिस्ट्रेशन बंद कर देना, पंजीकरण प्रक्रिया की जटिलता और नीतिगत स्पष्टता का अभाव जैसे मुद्दों ने इस सेक्टर को संकट की स्थिति में ला खड़ा किया है। अलग अलग स्तर पर उठाई जा रही आवाजें प्रभावी नहीं हो पा रही हैं, जिससे समाधान भी लंबित रहता है।

यदि ई-रिक्शा से जुड़े सभी हितधारक एक मंच पर आकर संगठित रूप से अपनी मांगें रखें, तो यह सेक्टर एक मजबूत दबाव समूह के रूप में उभर सकता है। इससे न केवल सरकार के साथ संवाद बेहतर होगा, बल्कि नीतिगत निर्णयों में भी तेजी आ सकती है।

असंगठित स्थिति में यह सेक्टर कमजोर बना रहता है, जिससे इसकी आकांक्षाएं अधूरी रह जाती हैं। वहीं संगठित प्रयासों के माध्यम से ई-रिक्शा उद्योग अपनी समस्याओं का समाधान समय पर करवा सकता है और अपनी आर्थिक स्थिति को भी मजबूत बना सकता है।

ऐसे में स्पष्ट है कि ई-रिक्शा सेक्टर के विकास और स्थिरता के लिए संगठन ही सबसे बड़ी शक्ति साबित हो सकता है।

यह आर्टिकल एकता और मिलकर हालात से लड़ने के बारे में है।

पिछले कुछ सालों में कई एसोसिएशन बनी हैं, लेकिन कोई भी खुद को एक ताकतवर ग्रुप के तौर पर खड़ा नहीं कर पाई।

सभी किसी न किसी के अपने फायदे से चलते हैं और एक बार वह फायदा पूरा हो जाने के बाद एसोसिएशन बंद हो जाती है, इसलिए इंडस्ट्री की प्रॉब्लम को सॉल्व करने के लिए कभी कोई मिलकर कोशिश नहीं की गई।

अगर प्रॉब्लम को सॉल्व करना है, तो सबसे पहले सभी को अपने फायदे से आगे बढ़कर इंडस्ट्री की ग्रोथ पर फोकस करना होगा। सेल्स ज़रूरी है, लेकिन रूल्स और रेगुलेशन को फॉलो न करने की वजह से हम इस मोड़ पर आ गए हैं।

अगर इस इंडस्ट्री को ज़िंदा रहना है, तो यह बहुत ज़रूरी है कि हर मैन्युफैक्चरर अपनी ड्यूटी करे और रूल्स, रेगुलेशन, कम्प्लायंस और सेफ्टी स्टैंडर्ड्स को माने और हम सब मिलकर इंडस्ट्री के मुद्दों को सॉल्व करें, न कि पर्सनल मुद्दों को।

अगर मैन्युफैक्चरर अप्रूव्ड गाड़ी के हिसाब से प्रोडक्ट बनाने पर टिके रहें और यह पक्का करें कि डीलर/कस्टमर भी रूल्स को फॉलो करें, तो कई प्रॉब्लम से बचा जा सकेगा।

ऊपर दिए गए पॉइंट्स पूरी तरह से मेरे पर्सनल सुझाव हैं, जिनका मकसद सिर्फ इंडस्ट्री की बेहतरी और सस्टेनेबल ग्रोथ है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : बालाघाट पुलिस का ऑपरेशन FACE

आपका चेहरा बताता है कि आपके पास कितने सिम हैं और आपकी डिजिटल पहचान क्या है।

बालाघाट पुलिस ने, एसपी आदित्य मिश्रा के नेतृत्व में, फर्जी सिम कार्ड नेटवर्क पर एक बड़ी कार्रवाई की है। यह कार्रवाई संचार मंत्रालय और दूरसंचार विभाग (DoT) की एक पहल, ऑपरेशन FACE (Facial Authentication and Compliance Enforcement) के तहत की गई थी।

इस ऑपरेशन में केवल 5 चेहरों की पहचान पर 450 फर्जी सिम कार्ड जारी किए जाने का खुलासा हुआ, जो पहचान सत्यापन प्रक्रियाओं के गंभीर दुरुपयोग को दर्शाता है।

C-DOT के ASTR सिस्टम जैसे फेशियल ऑथेंटिकेशन टूल्स ने भारत में पहले ही कई बड़े धोखाधड़ी के मामलों को सुलझाया है, जिसमें देश भर में 88 लाख से अधिक फर्जी सिमों को काटना, ऑपरेशन FACE के तहत रीवा और इंदौर में रैकेट का भंडाफोड़ करना और स्थानीय चुनावों के दौरान मतदाता धोखाधड़ी को रोकना शामिल है।

*** फर्जी सिम जारी करना:**

सिर्फ 5 चेहरों का उपयोग करके 450 सिम कार्ड सक्रिय किए गए थे, जो KYC (अपने ग्राहक को जानें) मानदंडों के व्यवस्थित उल्लंघन का संकेत देते हैं।

*** भौगोलिक विस्तार:**

कई जिलों से इसके तार जुड़े पाए गए, जिनमें शामिल हैं:

- मंडला
- डिंडोरी
- भोपाल
- उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से

*** कानूनी कार्रवाई:**

- कोतवाली थाने में तीन एफआईआर (FIR) दर्ज की गई हैं।
- व्यापक नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए एक विशेष जांच दल (SIT) का गठन किया गया है।

C-DOT टूल की भूमिका

इस धोखाधड़ी का पता लगाने में C-DOT (Centre for Development of Telematics) फेशियल ऑथेंटिकेशन टूल की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

यह टूल कैसे काम करता है:

* चेहरा प्रमाणीकरण: भेष बदलने से रोकने के लिए आवेदकों की लाइव छवियों का आधार-लिंक्ड तस्वीरों से मिलान करता है।

* डुप्लिकेट पहचान: विभिन्न टेलीकॉम ऑपरेटरों के पास एक ही चेहरे पर जारी किए गए कई सिमों की पहचान करता है।

* अनुपालन प्रवर्तन: सिम सक्रियण के लिए दूरसंचार विभाग के दिशानिर्देशों का सख्त पालन सुनिश्चित करता है।

बालाघाट मामले में उपयोग:

* टूल ने उन विसंगतियों को चिन्हित किया जहां सैकड़ों सिम केवल पांच चेहरे के प्रोफाइल से जुड़े थे।

* इससे पुलिस और दूरसंचार अधिकारियों को जिलों में फर्जी जारी किए गए सिमों का पता लगाने में मदद मिली।

* मामलों के पंजीकरण और SIT जांच का समर्थन करने के लिए डिजिटल साक्ष्य प्रदान किए।

जनहित में सलाह

बालाघाट पुलिस ने नागरिकों से पुरजोर अपील की है:

* अजनबियों को अपने व्यक्तिगत दस्तावेज न सौंपें।

* सिम कार्ड जारी करवाते समय स्वयं उपस्थित रहें।

* सत्यापित करें कि बायोमेट्रिक और फेशियल ऑथेंटिकेशन ठीक से किया गया है।

उपलब्धियाँ – DoT का AI-आधारित ASTR (अस्त्र):

1. 2022 से सक्रिय संचालन
2. 88 लाख+ संदिग्ध सिम कार्ड का पुनः सत्यापन कर डिस्कनेक्शन किया गया
3. 74,000 पॉइंट ऑफ सेल (PoS) एजेंटों को ब्लैकलिस्ट किया गया
4. 400 एफआईआर विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में दर्ज की गईं

महत्व:

* राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूती: फर्जी सिमों का उपयोग अक्सर साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी और संगठित अपराध में किया जाता है।

* परिचालन प्रभाव: SIT द्वारा नेटवर्क के ध्वस्त होने से कई राज्यों में हो रहे दुरुपयोग पर लगाम लगेगी।

* नीति प्रवर्तन: यह दूरसंचार बुनियादी ढांचे की सुरक्षा में ऑपरेशन FACE और C-DOT टूल की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करता है।

यह मामला तकनीक-संचालित पुलिसिंग का एक ऐतिहासिक उदाहरण है, जहाँ फेशियल ऑथेंटिकेशन टूल सीधे तौर पर कानून प्रवर्तन को साइबर-सक्षम धोखाधड़ी रोकने में सहायता कर रहे हैं।

चेहरा धोने के नियम , सलाह और सावधानियां ----शहनाज़ हुसैन

चेहरा धोना त्वचा की देखभाल का सबसे आसान काम लगता है / साफ़ सुथरी और आकर्षक त्वचा पाने की चाहत में हम दिन में बार बार चेहरा धोते हैं / सही तरीके से चेहरा धोने से हमारी त्वचा ताजा , साफ़ और स्वास्थ्य दिखती है लेकिन लगभग 80 प्रतिशत लोग चेहरा धोने में गलतियाँ करते हैं और कुछ तो हर घण्टे चेहरा धोते हैं लेकिन इसके बाबजूद उनकी त्वचा नीरस , डल और बेजान सी दिखती है जिसकी बजह से बह निराश ,परेशान से दिखते हैं / दरअसल चेहरा धोते समय की गई कुछ गलतियों की बजह से हमारी त्वचा को फायदे की बजाय नुकसान पहुंचता है और ज्यादातर लोग यह गलतियां अनजाने में कर बैठते हैं /

1 ------मेरी यह सलाह है की चेहरा धोने से पहले अपने हाथों को साबुन से जरूर साफ़ कर लें / हमारे हाथ निरन्तर बैक्टीरिया , तेल और गन्दगी के सम्पर्क में आते रहते हैं / गन्दे हाथों से चेहरा धोने से गन्दगी चेहरे पर फैल सकती है जिससे चेहरे के रोमछिद्र बंद हो जाते है और कील , मुहांसे निकल आते हैं / इससे त्वचा सम्बन्धी अनेक समस्याएं हो सकती हैं /

2 ----चेहरे को गर्म पानी से धोने से बचें / गर्म पानी से चेहरा धोने से त्वचा की प्रकृतिक नमी खतम हो जाती है / इस सूखेपन से निपटने के लिए त्वचा ज्यादा तेल स्त्रावित करने लगती है जोकि कील मुहांसों का कारण बनता है / अगर आप ठंडे पानी से चेहरा धोते हैं तो त्वचा के छिद्र सिकुड़ जाते है जिसकी बजह से चेहरा सही तरह से साफ़ नहीं हो पाता है / अगर आप कील मुहांसो से परेशान हैं तो ठन्डे पानी से मुंह धोने से परेशानी बढ़ सकती है क्योंकि ठंडा पानी त्वचा की सूजन जरूर कम करता है लेकिन मुहांसों से होने बाली सूजन को कम नहीं कर सकता / इसलिए चेहरा धोने के लिए हमेशा गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें और चेहरा रगड़ने की बजाय थपथपाकर सुखाएं / गुनगुना पानी रोमछिद्रों को खोलकर चेहरे से तेल और गंदगी को पूरी तरह हटा देता है और चेहरे के प्रकृतिक तेल और नमी को भी बनाए रखता है / सर्दियों में त्वचा को कोमल और मुलायम बनाये रखने के लिए गुनगुना पानी सबसे बेहतर माना जाता है /

3 -----चेहरे को धोने के लिए ज्यादा फेस वॉश का उपयोग नुकसान पहुंचा सकता हैं / ज्यादा फेस वॉश लगाने से त्वचा का नेचुरल आयल खतम हो जाता है और त्वचा रूखी रूखी लगने लगती है / चेहरा धोने के लिए मटर के दाने के बराबर फेस वाश काफी होता है / इसे अपनी हथेली पर डाल कर आपस में रगड़ कर झाग बनाएं और साफ़ उँगलियों की मदद से गीले चेहरे पर समान रूप से लगाएं / इसे आहिस्ता से गोलाकार गति में लगाएं क्योंकि इसके जोर से रगड़ने से त्वचा में घाव हो सकते हैं / इसके बाद इसे गुनगुने पानी से धो डालें / फेस वॉश का चयन करती बार अपनी स्किन टाइप का ध्यान रखें क्योंकि गलत फेस वॉश इस्तेमाल करने से नुकसान हो सकता है / रूखी त्वचा की लिए क्रीम आधारित फेस वॉश और संबेदनशील त्वचा के लिए माइल्ड क्लेंज़र का उपयोग करना चाहिए

4 ------मेरा यह मानना है की दिन में में चेहरे को सुबह और शाम दो बार धोना बेहतर होता है / सुबह चेहरा धोने से रात की गंदगी और आयल क्लीन हो जाता है जबकि शाम को चेहरा धोने से दिन भर की धूल ,मिट्टी और प्रदूषण हट जाता है

बार बार चेहरा धोना त्वचा को नुकसानदायक हो सकता है / अगर चेहरा धोने के बाद आपकी त्वचा रूखी और खिंची -खिंची सी लगती है और आप बार बार चेहरा धो रहे हैं क्योंकि बार बार चेहरा धोने से चेहरे का प्रकृतिक तेल और नमी गायब हो जाती है जिससे चेहरे की सुरक्षा परत कमजोर पढ़ जाती है /

चेहरा धोने में कम से कम एक मिनट तो लगाना ही चाहिए ताकि चेहरे की सारी मैल और गन्दगी निकल जाये / आप चाहे तो दो या तीन मिनट भी लगा सकते हैं ताकि त्वचा को पूरा समय मिल सके / मेरा यह मानना है की चेहरा धोने का कोई मानक तय नहीं किया गया है बल्कि यह स्किन टाइप पर निर्भर करता है /

5 ----चेहरा धोने के साथ सुखाना भी जरूरी होता है / चेहरा सुखाने के लिए मुलायम सूती साफ़ तौलिये का इस्तेमाल करें / गंदे तौलिये पर बैक्टीरिया हो सकते हैं जोकि आपकी त्वचा पर जम जायेंगे जोकि रोमछिद्रों को बंद कर सकते हैं जिससे मुहांसे और त्वचा की समस्याएं पैदा हो सकती हैं /आप चाहें तो त्वचा को प्रकृतिक तौर पर भी सूखने दे सकते हैं / तौलिये से त्वचा को हल्के से थपथपाकर सुखाएं और रगड़ने से परहेज करें खासकर अगर आपकी त्वचा संवेदनसील , रूखी और कील मुहांसों से ग्रसित हो / चेहरा सुखाने के लिए आप फेस वाइप्स का इस्तेमाल भी कर सकते हो लेकिन इसके नियमित परहेज से बचें / इनमें प्रेजर्वेटिव होते हैं जोकि त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं /

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेष्ज्ञ है और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय है /

आंतरिक पेट की चर्बी (Visceral Fat) और कैंसर: आधुनिक स्वास्थ्य की एक बढ़ती हुई चिंता

विसरल फैट (Visceral Fat) वह चर्बी है जो पेट की गुहा के भीतर गहराई में जमा होती है और लिवर, पैंक्रियास तथा आंतों जैसे महत्वपूर्ण अंगों को घेर लेती है। यह त्वचा के नीचे जमा होने वाली सामान्य चर्बी (Subcutaneous Fat) से अलग होती है।

आधुनिक चिकित्सकीय शोध बताते हैं कि विसरल फैट केवल ऊर्जा का भंडार नहीं है, बल्कि यह जैविक रूप से सक्रिय और स्वास्थ्य के लिए खतरनाक ऊतक है, जो कई प्रकार के कैंसर के जोखिम को बढ़ा सकता है।

1. विसरल फैट क्यों खतरनाक है

विसरल फैट शरीर में लगभग एंडोक्राइन अंग (Hormone producing organ) की तरह व्यवहार करता है। यह अनेक प्रकार के रसायन और हार्मोन छोड़ता है, जो शरीर की सामान्य जैविक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

विसरल फैट से निकलने वाले कुछ प्रमुख पदार्थ हैं:

सूजन पैदा करने वाले साइटोकाइन्स (TNF-α, IL-6)

लेप्टिन और एस्ट्रोजन जैसे हार्मोन

फ्री फैटी एसिड

विभिन्न ग्रोथ फैक्टर्स

ये सभी मिलकर शरीर में दीर्घकालिक सूजन (Chronic Inflammation), हार्मोनल असंतुलन और इंसुलिन रेजिस्टेंस उत्पन्न कर सकते हैं, जो कैंसर के विकास के प्रमुख कारण माने जाते हैं।

2. विसरल फैट किस प्रकार कैंसर को बढ़ावा देता है

1. दीर्घकालिक सूजन (Chronic Inflammation)

विसरल फैट से निकलने वाले सूजनकारी अणु शरीर में लगातार हल्की सूजन की स्थिति उत्पन्न करते हैं।

यह स्थिति DNA को क्षति पहुंचा सकती है और असामान्य कोशिकाओं के विकास की संभावना बढ़ा देती है, जो आगे चलकर कैंसर का रूप ले सकती है।

2. इंसुलिन रेजिस्टेंस और अधिक इंसुलिन

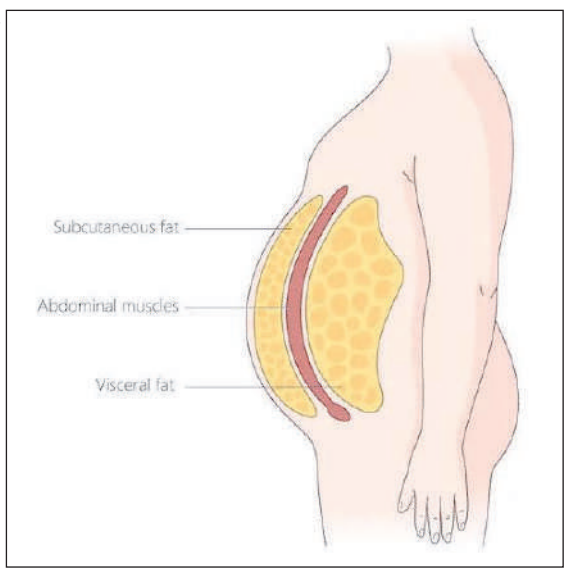

अधिक विसरल फैट होने पर शरीर में इंसुलिन रेजिस्टेंस बढ़ जाता है।

इससे शरीर अधिक मात्रा में इंसुलिन बनाने लगता है।

उच्च इंसुलिन स्तर:

कोशिकाओं की तेजी से वृद्धि को बढ़ावा देता है

कोशिकाओं की प्राकृतिक मृत्यु (Apoptosis) को कम कर देता है

यह वातावरण ट्यूमर बनने के लिए अनुकूल हो सकता है।

3. हार्मोनल परिवर्तन

अधिक विसरल फैट विशेषकर मोटापे में एस्ट्रोजन हार्मोन के स्तर को बढ़ा देता है।

उच्च एस्ट्रोजन स्तर निम्न कैंसरों से जुड़ा पाया गया है:

स्तन कैंसर (Breast Cancer)

एंडोमेट्रियल कैंसर (Endometrial Cancer)

4. प्रतिरक्षा प्रणाली पर प्रभाव

अत्यधिक विसरल फैट प्रतिरक्षा प्रणाली (Immune System) की क्षमता को कम कर सकता है, जिससे शरीर असामान्य या कैंसर कोशिकाओं को पहचानकर नष्ट करने में कमजोर पड़ सकता है।

3. विसरल फैट से जुड़े प्रमुख कैंसर

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (IARC) के अनुसार, शरीर में अधिक चर्बी कम से कम 13 प्रकार के कैंसर के जोखिम से जुड़ी हुई है।

इनमें प्रमुख हैं:

कोलोरेक्टल कैंसर (Colorectal Cancer)

पैंक्रियाटिक कैंसर (Pancreatic Cancer)

लिवर कैंसर (Liver Cancer)

स्तन कैंसर (Breast Cancer)

एंडोमेट्रियल कैंसर (Endometrial Cancer)

किडनी कैंसर (Kidney Cancer)

इसोफेगल एडेनोकार्सिनोमा (Esophageal Adenocarcinoma)

जिन लोगों की कमर का घेरा अधिक होता है (Central Obesity), उनमें सामान्यतः विसरल फैट अधिक होता है और इसलिए कैंसर का जोखिम भी अधिक हो सकता है।

4. नवीन वैज्ञानिक खोजें

हाल के जैव-चिकित्सीय शोधों ने कुछ और महत्वपूर्ण तंत्रों की पहचान की है:

1. एडिपोकाइन्स और ट्यूमर वृद्धि

विसरल फैट से निकलने वाले एडिपोकाइन्स (Adipokines) नामक संकेतक अणु सीधे ट्यूमर कोशिकाओं को बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

2. आंतों के माइक्रोबायोम में परिवर्तन

अधिक विसरल फैट आंतों के माइक्रोबायोम को असंतुलित कर सकता है, जिससे हानिकारक मेटाबोलाइट्स बनते हैं जो सूजन और कैंसर के जोखिम को बढ़ाते हैं।

3. फैट और ट्यूमर का संबंध

वैज्ञानिकों ने पाया है कि कुछ कैंसर कोशिकाएं विसरल फैट से निकलने वाले फैटी एसिड को ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करती हैं, जिससे ट्यूमर तेजी से बढ़ सकते हैं और फैल सकते हैं।

5. विसरल फैट कम करने के उपाय

वैज्ञानिक प्रमाणों के अनुसार निम्न उपाय प्रभावी माने जाते हैं:

✓ नियमित शारीरिक गतिविधि (तेज चाल से चलना, साइक्लिंग, प्रतिरोध व्यायाम)

✓ उच्च फाइबर युक्त आहार (सब्जियाँ, फल, साबुत अनाज, दालें)

✓ अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ और मीठे/कोल्ड ड्रिंक्स से परहेज

✓ स्वस्थ शरीर वजन बनाए रखना

✓ पर्याप्त नींद और तनाव नियंत्रण

✓ शराब का सीमित सेवन

6. एक महत्वपूर्ण तथ्य

कई बार कुछ लोग बाहर से पतले दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी जीवनशैली खराब होने के कारण उनके शरीर में विसरल फैट अधिक हो सकता है।

इसलिए केवल वजन ही नहीं, बल्कि मेटाबोलिक स्वास्थ्य बनाए रखना अधिक महत्वपूर्ण है।

✓ संक्षेप में:

विसरल फैट केवल जमा हुई चर्बी नहीं है, बल्कि यह एक जैविक रूप से सक्रिय ऊतक है जो शरीर में सूजन, हार्मोनल असंतुलन और मेटाबोलिक गड़बड़ी उत्पन्न कर सकता है। इन कारणों से कई प्रकार के कैंसर का जोखिम बढ़ सकता है।

विसरल फैट (Visceral Fat) की पहचान और नियंत्रण — एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य विषय

आइए समझते हैं कि विसरल फैट की पहचान कैसे की जा सकती है, इसे कैसे कम किया जा सकता है, और क्यों बहुत से भारतीयों में सामान्य वजन होने के बावजूद भी यह चर्बी जमा हो जाती है।

1. विसरल फैट की पहचान कैसे करें

कमर की माप (सरल घरेलू तरीका)

डॉक्टर अक्सर कमर की परिधि (Waist Circumference) को विसरल फैट का एक महत्वपूर्ण संकेतक मानते हैं।

पुरुष: 90 सेमी (लगभग 35 इंच) से अधिक होने पर जोखिम बढ़ता है।

महिलाएँ: 80 सेमी (लगभग 31 इंच) से अधिक होने पर जोखिम बढ़ता है।

कमर का घेरा जितना अधिक होता है, आमतौर पर पेट के अंदरूनी अंगों के आसपास चर्बी जमा होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है।

१. कमर-से-ऊँचाई अनुपात (Waist-to-Height Ratio)

यह भी एक उपयोगी संकेतक माना जाता है।

सूत्र:

कमर की परिधि ÷ ऊँचाई

यदि यह अनुपात 0.5 से अधिक हो, तो विसरल फैट और मेटाबोलिक जोखिम अधिक माना जाता है।

उदाहरण:

ऊँचाई = 170 सेमी

कमर = 90 सेमी

अनुपात = 0.53 बढ़ा हुआ मेटाबोलिक जोखिम

3. चिकित्सकीय परीक्षण (सबसे सटीक तरीका)

अस्पतालों में विसरल फैट की मात्रा को अधिक सटीक रूप से मापा जा सकता है।

इसके लिए निम्न परीक्षण उपयोग किए जाते हैं:

CT Scan

MRI Scan

DEXA Scan

इन परीक्षणों से यह पता चलता है कि लिवर, पैंक्रियास और अन्य अंगों के आसपास कितनी चर्बी जमा है।

१. सामान्य वजन होने पर भी कई भारतीयों में विसरल फैट क्यों होता है

वैज्ञानिक इसे "Thin Outside, Fat Inside (TOFI)" कहते हैं।

अर्थात व्यक्ति बाहर से दुबला दिखाई देता है, लेकिन उसके शरीर के अंदर छिपी हुई विसरल चर्बी अधिक हो सकती है।

इसके प्रमुख कारण हैं:

1. परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट (Refined Carbohydrates) का अधिक सेवन

बार-बार निम्न खाद्य पदार्थों का सेवन पेट की चर्बी बढ़ा सकता है:

सफेद चावल

मैदा से बने उत्पाद

मिठाइयाँ

मीठे पेय पदार्थ

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड स्नैक्स

२. शारीरिक निष्क्रियता (Sedentary Lifestyle)

लंबे समय तक बैठना, कम शारीरिक गतिविधि और मांसपेशियों की कमी से अंदरूनी अंगों के आसपास चर्बी जमा होने लगती है।

३. आनुवंशिक प्रवृत्ति

दक्षिण एशियाई लोगों में कम वजन पर भी पेट के आसपास चर्बी जमा होने की प्राकृतिक प्रवृत्ति देखी जाती है।

4. तनाव और अपर्याप्त नींद

लगातार तनाव से कॉर्टिसोल हार्मोन बढ़ जाता है, जो पेट के आसपास चर्बी जमा होने को बढ़ावा देता है।

३. विसरल फैट कम करने के वैज्ञानिक तरीके

1. नियमित शारीरिक गतिविधि

निम्न गतिविधियों का संयोजन विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है:

तेज चाल से चलना

स्ट्रेंथ ट्रेनिंग

साइक्लिंग

योग

व्यायाम इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ाता है और विसरल फैट को कम करने में मदद करता है।

२. फाइबर का अधिक सेवन

फाइबर आंतों के माइक्रोबायोम को बेहतर बनाता है और चर्बी के संचय को कम कर सकता है।

अच्छे स्रोत:

सब्जियाँ

फल

दालें

साबुत अनाज

मेवे और बीज

३. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ कम करें

निम्न पदार्थों वाले खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित करें:

मैदा

अतिरिक्त चीनी

कृत्रिम एडिटिव्स

ट्रांस फैट

ये पदार्थ विसरल फैट बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. पर्याप्त प्रोटीन का सेवन

उचित मात्रा में प्रोटीन लेने से मांसपेशियाँ मजबूत रहती हैं और चर्बी जमा होने की प्रवृत्ति कम होती है।

प्रोटीन के अच्छे स्रोत:

दालें

फलियाँ

दुग्ध उत्पाद

सोया उत्पाद

मेवे और बीज

5. स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम बनाए रखें

किण्वित (Fermented) खाद्य पदार्थ लाभदायक हो सकते हैं:

दही

छाछ

किण्वित सब्जियाँ

स्वस्थ माइक्रोबायोम सूजन और मेटाबोलिक रोगों के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

4. महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संदेश

अत्यधिक विसरल फैट कई गंभीर बीमारियों से जुड़ा हुआ है, जैसे:

टाइप-२ डायबिटीज

कोरोनरी आर्टरी डिजीज

नॉन-अल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज

कोलोरेक्टल कैंसर

इसलिए आधुनिक चिकित्सा के अनुसार विसरल फैट को नियंत्रित करना स्वास्थ्य संरक्षण की एक अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीति है।

संक्षेप में:

विसरल फैट एक छिपी हुई लेकिन खतरनाक चर्बी है, जो मेटाबोलिक रोगों और कई प्रकार के कैंसर का जोखिम बढ़ा सकती है।

संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों का कम सेवन इसे नियंत्रित करने के सबसे प्रभावी उपाय हैं।

गर्मियों में क्या खाएं कि रहें तरोताज़ा, स्वस्थ और रोगमुक्त?

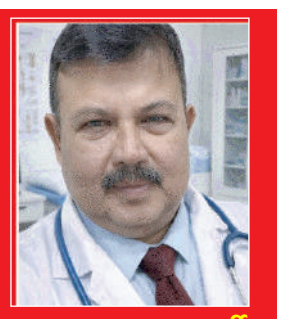

डा रुप कुमार बनर्जी
होमियोपैथिक चिकित्सक

गर्मी का मौसम आ गया है। तेज धूप, गर्म हवाएं, बढ़ता तापमान न केवल असहजता लाता है, बल्कि अनेक बीमारियों को भी आमंत्रित करता है। यदि इस मौसम में खान-पान और जीवनशैली पर ध्यान न दिया जाए, तो शरीर जल्दी ही थकान, कमजोरी और रोगों की चपेट में आ सकता है।

गर्मियों में अक्सर निम्न समस्याएँ देखने को मिलती हैं - डिहाइड्रेशन (शरीर मे पानी की कमी), लू लगना / हीट स्ट्रोक, उल्टी-दस्त / हैजा, फूड पॉइज़निंग, एसिडिटी और अपच, पेशाब में जलन, गुर्दे की पथरी का खतरा, चक्कर, सिरदर्द और अत्यधिक कमजोरी।

गर्मियों में क्या खाएं जिससे शरीर रहे ठंडा, स्वस्थ और ऊर्जावान:-- 1. खीरा, ककड़ी और सलाद। खीरा गर्मियों का सबसे उत्तम आहार माना जाता है। इसमें लगभग 95–96% पानी होता है, जो शरीर को हाइड्रेट रखता है।यह कब्ज़ दूर करता है, पेट को ठंडक देता है और त्वचा को भी निखारता है।

2. तरबूज, खरबूजा और मौसमी फल। तरबूज, खरबूजा, संतरा, अंगूर और पपीता गर्मियों के वरदान हैं।इनमें पानी, विटामिन C और प्राकृतिक इलेक्ट्रोलाइट्स भरपूर होते

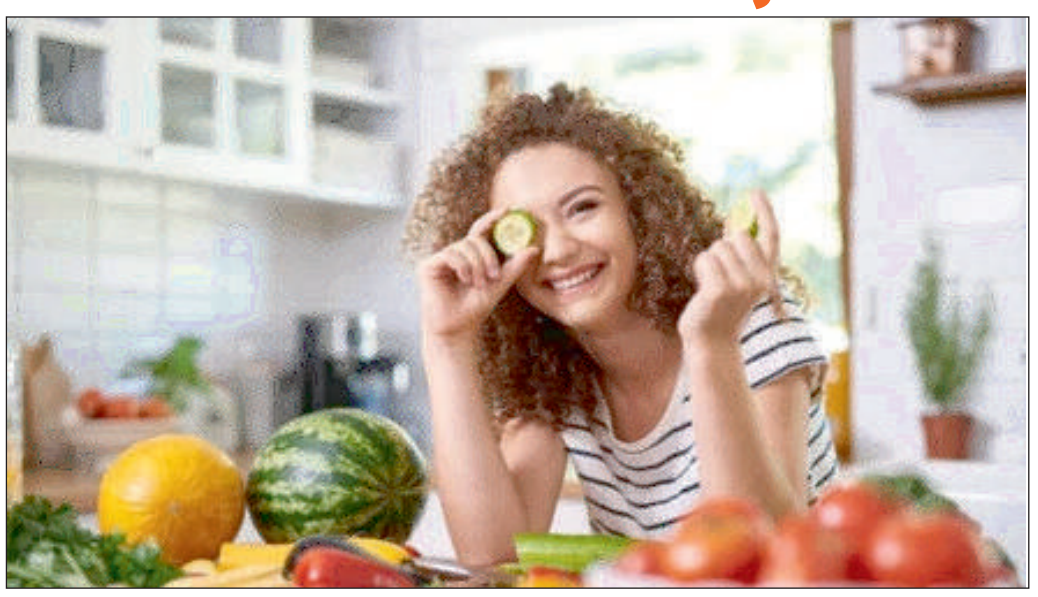

हैं।विशेष रूप से तरबूज शरीर को ठंडा रखता है और लू से बचाने में सहायक माना जाता है।

3. नारियल पानी।नारियल पानी गर्मियों में अमृत समान है।यह शरीर में पसीने से निकलने वाले लवण और मिनरल्स की कमी को पूरा करता है तथा कमजोरी और थकान को दूर करता है।

4. नींबू पानी और ORS ।नींबू पानी में सेंधा नमक और थोड़ा सा मिश्री/चीनी मिलाकर पीना गर्मी में अत्यंत लाभकारी है।यह शरीर में पानी और नमक की कमी को पूरा करता है तथा चक्कर और कमजोरी से बचाता है।(मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप के रोगी, मीठा अथवा नमक डालने से पूर्व अपने चिकित्सक से जरूर परामर्श ले लें)।

5. छाछ, मट्ठा और दही। छाछ गर्मियों का सर्वश्रेष्ठ पेय है।इसमें प्रोबायोटिक्स होते हैं जो पाचन शक्ति बढ़ाते हैं और पेट की गर्मी को शांत करते हैं।भुना जीरा, काला नमक और पुदीना डालकर पीने से यह और भी लाभकारी हो जाती है।

6. हल्की और पचने योग्य सब्जियाँ।गर्मियों में लौकी, तोरी, नेनुआ, परवल, चौलाई, कद्दू और करेला खूब खाना चाहिए।ये शरीर को ठंडक देते हैं और पाचन को भी सहज रखते हैं।

7. बेल का शरबत और आम पन्ना। बेल का शरबत पेट के लिए बहुत लाभकारी है।यह दस्त, कब्ज़ और एसिडिटी में आराम देता है।कच्चे आम का आम पन्ना लू से बचाने का पारंपरिक और अत्यंत प्रभावी उपाय माना जाता है।

गर्मियों में क्या न खाएं?:- बासी भोजन,

तला-भुना और मसालेदार भोजन

अधिक चाय-कॉफी

कोल्ड ड्रिंक और सोडा

खुले में कटे फल

अधिक मीठी चीजें

बहुत ज्यादा जंक फूड, स्ट्रीट फूड और फास्ट फूड का सेवन

पार्टियों में जाकर संभल कर ही खाएं

ये लक्षण दिखें तो तुरंत ध्यान दें:- बहुत अधिक प्यास, चक्कर आना, सिरदर्द, उल्टी, पेशाब कम आना, शरीर बहुत गर्म होना, कमजोरी या बेहोशी। ये लू या डिहाइड्रेशन के संकेत हो सकते हैं। गर्मी में सही भोजन ही सबसे बड़ी औषधि है।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक 5 अंक ज्योतिष में बुध (Mercury) की शक्तिः

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

1. अंक 5 का मूल महत्वः

अंक 5 का स्वामी बुध (Mercury) है, जो निम्न का ग्रह हैः

बुद्धि और संचार,

तर्क और विश्लेषण,

व्यापार और अनुकूलन क्षमता,

गति, चलायमानता और बहुमुखी प्रतिभा,

युवावस्था और जिज्ञासा,

बुध को संदेशवाहक ग्रह कहा जाता है, जो यह नियंत्रित करता है कि हम कैसे सोचते हैं, बोलते हैं और दुनिया के साथ कैसे जुड़ते हैं।

यह अंक दर्शाता हैः

तेज सोच और तीव्र बुद्धि,

संचार कौशल,

लचीलापन और अनुकूलन क्षमता,

जिज्ञासा और सीखने की क्षमता,

स्वतंत्रता और परिवर्तन का प्रेम,

अंक 5 से प्रभावित लोग सामान्यतः बुद्धिमान, अभिव्यक्तिशील और गतिशील होते हैं, जिनमें एक साथ कई कार्य संभालने की क्षमता होती है।

2. जब अंक 5 (बुध) मजबूत / सकारात्मक होता हैः

जब बुध की ऊर्जा संतुलित और मजबूत होती है, तो यह अत्यंत सक्षम और सफल व्यक्तियों का निर्माण करती है।

व्यक्तित्व गुणः

ऐसे व्यक्ति होते हैंः

बुद्धिमान और चतुर,

उत्कृष्ट संचारक,

तेजी से सीखने वाले,

किसी भी परिस्थिति में अनुकूल होने वाले,

आकर्षक और सामाजिक रूप से सक्रिय,

ये लोग आसानी से लोगों से जुड़ जाते हैं और अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं।

करियर और सफलताः

मजबूत अंक 5 देता हैः

व्यापार, मार्केटिंग, मीडिया, संचार और ट्रेडिंग में सफलता,

एक से अधिक करियर या आय स्रोत संभालने की क्षमता,

नेटवर्किंग और संचार वाले क्षेत्रों में वृद्धि,

तेज निर्णय लेने और स्मार्ट कार्यान्वयन की क्षमता।

आर्थिक प्रभावः

समझदारी भरे विचारों से मजबूत कमाई की क्षमता,

ट्रेडिंग, व्यापार और सट्टा क्षेत्रों में सफलता,

एक से अधिक आय स्रोत बनाने की क्षमता।

संबंधः

मित्रवत और आनंदमय जीवनसाथी,

भावनाओं को व्यक्त करने में अच्छा,

सामाजिक और आकर्षक व्यक्तित्व,

हालांकि, इन्हें स्वतंत्रता और प्रतिबद्धता के बीच संतुलन बनाना आवश्यक होता है।

मानसिक शक्तिः

तीव्र विश्लेषणात्मक बुद्धि,

तेज समस्या-समाधान क्षमता,

परिवर्तन के अनुसार आसानी से ढलने की क्षमता,

सार रूप में, मजबूत अंक 5 व्यक्ति को बुद्धिमान, बहुमुखी, सफल और सामाजिक रूप से प्रभावशाली बनाता है।

3. जब अंक 5 (बुध) कमजोर / नकारात्मक होता हैः

जब बुध असंतुलित होता है, तो यह अस्थिरता और मानसिक भ्रम उत्पन्न करता है।

व्यक्तित्व समस्याएँः

बेचैनी और अधीरता,

अधिक सोच या घबराहट,

ध्यान की कमी,

सतही सोच,

अधिक बोलना या गलत संचार।

करियर समस्याएँः

बार-बार नौकरी बदलना,

करियर में स्थिरता की कमी,

जल्दबाजी में गलत निर्णय,

कार्यों को पूरा करने में कठिनाई।

आर्थिक समस्याएँः

अस्थिर आय,

जल्दबाजी के निर्णयों से नुकसान,

जोखिम भरा आर्थिक व्यवहार।

संबंध समस्याएँः

प्रतिबद्धता की समस्या,

फ्लर्ट करने वाला या अस्थिर व्यवहार,

संचार की कमी से गलतफहमियाँ।

मानसिक और भावनात्मक प्रभावः

चिंता और तनाव,

मानसिक अस्थिरता,

भ्रम और असमंजस,

ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई,

कमजोर अंक 5 बिखरी हुई ऊर्जा, अस्थिरता और दिशा की कमी उत्पन्न करता है।

करियर समस्याएँः

बार-बार नौकरी बदलना,

करियर में स्थिरता की कमी,

जल्दबाजी में गलत निर्णय,

कार्यों को पूरा करने में कठिनाई।

आर्थिक समस्याएँः

अस्थिर आय,

जल्दबाजी के निर्णयों से नुकसान,

जोखिम भरा आर्थिक व्यवहार।

संबंध समस्याएँः

प्रतिबद्धता की समस्या,

फ्लर्ट करने वाला या अस्थिर व्यवहार,

संचार की कमी से गलतफहमियाँ।

मानसिक और भावनात्मक प्रभावः

चिंता और तनाव,

मानसिक अस्थिरता,

भ्रम और असमंजस,

ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई,

कमजोर अंक 5 बिखरी हुई ऊर्जा, अस्थिरता और दिशा की कमी उत्पन्न करता है।

4. संकेत कि बुध (अंक 5) कमजोर हैः

आप निम्न संकेत देख सकते हैंः

एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई,

बार-बार योजनाओं या लक्ष्यों में बदलाव,

संचार में समस्या,

घबराहट या चिंता,

अस्थिर करियर या आय,

कई कार्य शुरू करना लेकिन पूरा न करना।

5. अंक 5 (बुध) को मजबूत करने के उपायः

आध्यात्मिक उपायः

भगवान विष्णु या भगवान गणेश की पूजा करें।

प्रतिदिन या बुधवार को मंत्र जाप करेंः "ॐ बुं बुधाय नमः" (108 बार)

विष्णु सहस्रनाम या बुध संबंधित मंत्रों का पाठ करें।

जीवनशैली उपायः

ध्यान और अनुशासन का अभ्यास करें,

अत्यधिक मल्टीटास्किंग से बचें

बोलने के साथ सुनने की क्षमता भी सुधारें,

दैनिक जीवन को व्यवस्थित रखें।

दान (बहुत प्रभावी):

बुधवार को:

हरी वस्तुएं दान करें (हरी सब्जियां, मूंग दाल),

छात्रों या युवाओं की सहायता करें,

गाय को भोजन कराएं।

रंग और वस्त्रः

हरा, हल्का हरा या पेस्टल रंग पहनें

बुध कमजोर होने पर बहुत गहरे या फीके रंगों से बचें।

भोजन आदतें:

ताजा और हल्का भोजन करें

हरी सब्जियां शामिल करें

अधिक जंक फूड और उत्तेजक पदार्थों से बचें।

रत्न उपाय (सही मार्गदर्शन के बाद ही):

पन्ना (Emerald)

सोने या चांदी में कनिष्ठा उंगली में पहनें,

बुधवार को उचित सलाह के बाद धारण करें।

6. अंक 5 से संबंधित व्यवसायः

मजबूत अंक 5 वाले लोग सफल होते हैंः

व्यापार और ट्रेडिंग में,

मार्केटिंग और सेल्स में,

मीडिया और संचार में,

लेखन और पत्रकारिता में,

आईटी, नेटवर्किंग और डिजिटल क्षेत्रों में,

यात्रा और पर्यटन में।

7. अंतिम समझः

अंक 5 दर्शाता हैः

बुद्धि, संचार और अनुकूलन क्षमता

जब यह मजबूत होता है, तो देता हैः

व्यापार में सफलता

मजबूत संचार,

तेज सोच,

बहुमुखी प्रतिभा।

जब यह कमजोर होता है, तो देता हैः

भ्रम,

अस्थिरता,

ध्यान की कमी,

गलत निर्णय।

निष्कर्षः

अंक 5 की वास्तविक शक्ति इसमें हैः

गति और स्थिरता का संतुलन

बुध तेज और बुद्धिमान है, लेकिन बिना नियंत्रण के यह बिखर जाता है।

यदि इसे अनुशासन और स्पष्टता के साथ मार्गदर्शन दिया जाए, तो यह देता हैः

सफलता, संचार शक्ति और आर्थिक वृद्धि

लेकिन यदि यह असंतुलित हो जाए, तो यह देता हैः

भ्रम, अस्थिरता और व्यर्थ क्षमता का नुकसान

तंत्र और योग के गहन विज्ञान में और ग्रंथों में आज्ञा चक्र की अधिष्ठात्री देवी — माँ हाकिनी — का अत्यंत रहस्यमय वर्णन मिलता है।

पिंकी कुंडू

माँ हाकिनी ज्ञान, ध्यान, अंतर्दृष्टि और आत्म-शक्ति की देवी हैं।

उनका स्थान है — आज्ञा चक्र (भ्रूमध्य), जहाँ से साधक की चेतना दिव्य स्तर पर प्रवेश करती है।

हाकिनी साधना का प्रथम नियमः

जो साधक माँ हाकिनी को सिद्ध करना चाहता है,

उसे इंद्रिय संयम का पालन करना अनिवार्य है।

वह साधक किसी भी प्रकार के काम-भोग, आकर्षण या स्त्री-संग से दूर रहेगा,

तभी उसकी ऊर्जा (ओजस) ऊपर उठकर आज्ञा चक्र में स्थिर होगी।

बिना ब्रह्मचर्य और मानसिक शुद्धता के

हाकिनी साधना केवल कल्पना बनकर रह जाती है।

सच्चा साधक वही है —

जो अपने मन, इंद्रियों और इच्छाओं पर विजय पा ले।

तभी माँ हाकिनी की कृपा से

उसे दिव्य दृष्टि, गहन ज्ञान और अंतर-जागृति प्राप्त होती है।

यह साधना अत्यंत गूढ़ और शक्तिशाली है,

इसे केवल योग्य गुरु के मार्गदर्शन में ही करना चाहिए।

अंधविश्वास, आस्था और शोषण का खतरनाक चक्र.

पिंकी कुंडू

हर कुछ महीनों में एक नया "बाबा" सामने आता है

और फिर कुछ समय बाद उसके काले कारनामों की खबरें भी।

सवाल यह नहीं है कि ऐसे लोग क्यों पैदा होते हैं।

सवाल यह है कि ऐसे लोग बार-बार सफल क्यों हो जाते हैं?

हम 21वीं सदी में हैं।

शिक्षा है, इंटरनेट है, जानकारी हर हाथ में हैङ्घ

फिर भी पढ़े-लिखे, समझदार, अच्छे परिवारों से आने वाले लोग भी

इन तथाकथित बाबाओं के जाल में फँस जाते हैं।

क्यों?

क्योंकि यह केवल "अंधविश्वास" का मुद्दा नहीं है,

यह भावनाओं, डर और खालीपन का खेल है।

जब इंसान मानसिक रूप से कमजोर होता हैङ्घ

जब उसे जीवन में सहारा, समाधान या चमत्कार चाहिए होता हैङ्घ

तब वह तर्क से नहीं, उम्मीद से सोचता है।

और यही वह जगह है जहाँ ये "बाबा" प्रवेश करते हैं।

वे भगवान का नाम लेते हैं,

विश्वास का सहारा लेते हैं,

और धीरे-धीरे इंसान की सोच, निर्णय और आत्मविश्वास पर कब्ज़ा कर लेते हैं।

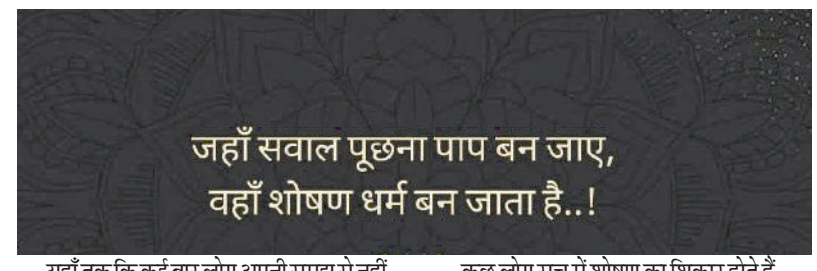

यहाँ तक कि कई बार लोग अपनी समझ से नहीं,

उनके कहे हर शब्द को सच मानकर जीने लगते हैं।

और जब सच्चाई सामने आती है,

तो समाज दो हिस्सों में बंट जाता है

👉 एक जो कहता है "ये सब झूठ है"

👉 दूसरा जो पीड़ित पर ही सवाल उठाने लगता है

लेकिन असली समस्या कहीं और है।

समस्या यह है कि हम सवाल पूछना भूल गए हैं।

हम "आस्था" और "अंधविश्वास" के बीच की रेखा पहचानना नहीं चाहते।

हम किसी को भगवान बना देते हैं,

और फिर उसी के सामने अपनी सोच, अपनी स्वतंत्रता,

यहाँ तक कि अपनी गरिमा भी रख देते हैं।

यह भी सच है कि हर मामला एक जैसा नहीं होता।

कुछ लोग सच में शोषण का शिकार होते हैं,

और कुछ मामलों में सच्चाई जटिल होती है।

लेकिन हर बार दोषारोपण या मज़ाक बनाने से पहले

हमें यह समझना होगा कि

👉 समस्या व्यक्ति नहीं, पूरी सोच और सिस्टम है

👉 समस्या अंधभक्ति है, जहाँ सवाल पूछना पाप समझा जाता है

जब तक हम

"क्यों?" पूछना शुरू नहीं करेंगे,

तब तक हर बार एक नया बाबा आएगा...

और वही कहानी दोहराई जाएगी।

शायद अब जरूरत है कि हम आस्था रखें,

लेकिन आंखें बंद करके नहीं...

बल्कि समझ और जागरूकता के साथ।

क्योंकि भगवान पर विश्वास रखना अलग बात है,

और किसी इंसान को भगवान बना देना सबसे खतरनाक गलती।

आदि अंत का पता नहीं, शून्य रूप महराज, कण-कण भीतर आप हो राखो सबकी लाज

पिंकी कुंडू

1. आदि अंत का पता नहीं:

इस पंक्ति का अर्थ है कि शिव 'अनादि' (जिसका कोई आरंभ न हो) और 'अनंत' (जिसका कोई अंत न हो) हैं। वे समय और काल के चक्र से परे हैं। न तो कोई यह जानता है कि वे कब प्रकट हुए और न ही उनके अस्तित्व का कोई अंत है। वे शाश्वत हैं।

2. शून्य रूप महराजः

शिव को 'शून्य' कहा गया है। तंत्र और दर्शन में शून्य का अर्थ 'अभाव' नहीं, बल्कि 'पूर्णता' है। जैसे गणित में शून्य से ही सब अंक निकलते हैं, वैसे ही शिव वह शून्य हैं जिससे पूरी सृष्टि उत्पन्न होती है और अंत में उसी में विलीन हो जाती है। वे निराकार ब्रह्म का प्रतीक हैं।

3. कण-कण भीतर आप होः

शिव केवल कैलाश या मंदिरों में ही नहीं, बल्कि संसार के हर छोटे से छोटे परमाणु (कण) में वास करते हैं। वे जड़ और चेतन, दोनों में मौजूद हैं। यह भाव अद्वैत दर्शन को दर्शाता है कि आत्मा और परमात्मा एक ही हैं।

4. राखो सबकी लाजः

यह भक्त की करुण पुकार है। जब हमें यह बोध हो जाता है कि ईश्वर हर जगह है और वही सर्वशक्तिमान है, तब हम स्वयं को उन्हें सौंप देते हैं। भक्त प्रार्थना कर रहा है कि हे प्रभु, आप तो घट-घट की जानने वाले हैं, इस संसार में हमारी मर्यादा और सम्मान की रक्षा करना आपका ही दायित्व है।

माँ काली की पूजा में पान चढ़ाना बहुत शुभ और शक्तिशाली माना जाता है। यह भोग भक्ति, समर्पण और ऊर्जा का प्रतीक है।

पिंकी कुंडू

ताजा पान का पत्ता लो

कत्था और हल्का चूना

सुपारी

इलायची

1 या 2 लौंग (विशेष महत्व)

चाहें तो थोड़ा सा गुलकंद

माँ को पान में 1 या 2 लौंग लगाकर चढ़ाना सबसे उत्तम है।

लौंग शक्ति, जागृति और रक्षा का प्रतीक है।

पान का बीड़ा बनाकर उसमें लौंग लगाएं और माँ काली के चरणों में श्रद्धा से अर्पित करें।

अमावस्या, काली पूजा या किसी भी विशेष साधना के समय इसका फल कई गुना बढ़ जाता है।

प्रत्येक शनिवार को चढ़ा सकते है

सच्ची श्रद्धा से किया गया छोटा सा भोग भी माँ को तुरंत प्रसन्न कर देता है।

सरकार की पारदर्शी नीतियों की बदौलत युवाओं को रोजगार के मिल रहे भरपूर अवसर- बोले सहकारिता मंत्री

ब्राह्मण 36 बिरादरी को साथ लेकर चलने वाला, सबका सम्मान हमारी जिम्मेदारी*

युवाओं को खेल, शिक्षा समेत हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए काम करे समाज

कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने झज्जर सेक्टर-9 में भगवान परशुराम भवन का किया शिलान्यास

झज्जर, 5 अप्रैल। हरियाणा के सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि झज्जर में स्थापित होने वाला भगवान परशुराम भवन इलाके में जरूरतमंदों की सेवा और युवाओं को लक्ष्य प्राप्त करने का माध्यम बनेगा। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण समुदाय हमेशा 36 बिरादरी को साथ लेकर चला है, जिसकी बदौलत समाजिक व्यवस्था मजबूत हुई है। परिवारों में मजबूती और खुशहाली लाने के लिए हम सब मिलकर काम करेंगे।

रविवार को सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने सेक्टर 9, झज्जर में श्री ब्राह्मण महासभा के तहत निर्माण होने वाले श्री परशुराम भवन का शिलान्यास किया। श्री ब्राह्मण महासभा प्रधान पंडित राज देवरखाना, महासचिव सन्त सुरेहती, वरिष्ठ उपप्रधान पंडित कुलदीप, उपप्रधान रविन्द्र कौशिक, कोषाध्यक्ष बालकिशन भदाना, सहसचिव विजय कुमार द्वारा सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा का भव्य स्वागत किया। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि झज्जर में ऐतिहासिक श्री परशुराम भवन बनेगा, जो ब्राह्मण समाज के साथ-साथ अन्य वर्गों को साथ लेकर आगे वढाने में बड़ा योगदान देगा। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने ब्राह्मण समाज उत्थान के लिए निरन्तर कदम उठा रहे हैं। विधानसभा में मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने गौड़ ब्राह्मण विद्या प्रचारिणी सभा के तीसरे कैम्पस के पास हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा सेक्टर 26 में चार एकड़ में भगवान परशुराम विरासत पार्क विकसित करने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि समाज का मान-सम्मान और मजबूती निरन्तर बढ़ रही है, जिस प्रकार गौमाता में 33 कोटि देवी-देवता वास करते हैं, उसी प्रकार ब्राह्मण 36 बिरादरी को साथ लेकर चलता है। उन्होंने आह्वान किया कि समाज के प्रबुद्धजनों को चाहिए कि वो युवाओं को मजबूती और अनुशासन के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करें और एक-दूसरे को मजबूती देने का काम करें।

सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि हमें पंडित भगवत दयाल शर्मा, पंडित श्रीराम शर्मा, पंडित नेकीराम शर्मा की भांति सभी पथप्रदर्शकों के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए काम करें। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार की पारदर्शिता की बदौलत युवाओं को रोजगार के भरपूर अवसर मिले हैं। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी अभिभावकों की असली पूंजी है। उन्होंने श्री ब्राह्मण सभा, झज्जर के पदाधिकारियों से आह्वान किया कि वो श्री परशुराम भवन में डिजिटल लाइब्रेरी जरूर स्थापित करें, ताकि युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर आगे बढ़ सकें। इससे परिवारों में खुशहाली व मजबूती आएगी। उन्होंने कहा कि गौड़ ब्राह्मण विद्या प्रचारिणी सभा के शीघ्र चुनाव करवाए जाएंगे और वर्तमान में सदस्यता अभियान चल रहा है। कार्यक्रम में मंच संचालन संजय शर्मा ने किया।

यह गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर पर बादली विधायक डॉ कुलदीप वत्स, पूर्वविधायक नरेश शर्मा, सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां बीरेंद्र सिंह, प्रबंधक आनंद कुमार, पार्षद मिथुन शर्मा, ईश्वर शर्मा कोंधरावली, मुकुल कौशिक, पूर्वसरपंच दुल्हेड़ा संजय शर्मा, यादव महासभा से रामवतार यादव, रेणुका पंडित, मयंक शर्मा, पूर्वचेयरमेन मनीष शर्मा, सुभाष शर्मा बेरी, दिनेश शर्मा बिट्टू, प्रवक्ता गौतम राम डीघल, रविंद्र कौशिक दूबलधन, आशा राम एडवोकेट, पंचायत समिति सदस्य सूरजमल कौशिक, बलवान कौशिक, अरुण दुजाना, तृभुवन कशयप सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

बिनावर में शुभ कृष्णा भारत गैस एजेंसी संचालक की मनमानी व दबंगई के चलते कनेक्शन धारकों को गैस न मिलने से आक्रोश, कनेक्शन धारकों ने परेशान होकर बिनावर पुलिस को दिया शिकायत प्रार्थना पत्र, दर्जनो गैस कनेक्शन धारक मायूस होकर लौटे घर

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बिनावर। जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में दिन रविवार की सुबह में ग्रामीण क्षेत्र के दर्जनों कनेक्शन धारकों को गैस न मिलने पर ग्रामीणों ने हंगामा काटा। जिससे परेशान होकर कनेक्शन धारको ने भारत गैस एजेंसी संचालक डॉ अमित शर्मा के खिलाफ रात्रि में ब्लैक में गैस बेचने व कनेक्शन धारकों को गैस न देने पर थाना बिनावर पुलिस को शिकायत प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

जिसके बाद थाना बिनावर पुलिस ने गैस कनेक्शन धारकों को शांत कर स्थिति संभाली। इस दौरान ग्रामीणों ने बताया कि कई दिनों से भारत गैस एजेंसी चक्कर काट रहे थे, लेकिन गैस एजेंसी संचालक डॉ अमित शर्मा अपनी मनमानी और दबंगई के चलते अभद्र भाषा का प्रयोग करके कनेक्शन धारकों को आए दिन टालमटोल करते रहे।

यहां आपको पता चले मामला जनपद बदायूं के थाना बिनावर कस्बा का है, जहां थाने के पीछे मोहम्मदपुर रोड स्थित शुभ कृष्णा भारत गैस एजेंसी का है, जहां ग्रामीणों ने गैस न मिलने पर शुभ कृष्णा भारत गैस एजेंसी के संचालक डॉ अमित शर्मा पर अनगिनत गंभीर आरोप लगाए हैं जैसे गैस कनेक्शन धारकों से 30 50 एक्स्ट्रा चार्ज मांगा जा रहा है। कनेक्शन धारको ने बताया कि एक हफ्ते पूर्व मे ग्रामीण क्षेत्र के दर्जनों कनेक्शन धारक ने अपने ही मोबाइलों से गैस बुकिंग की थी। जब कनेक्शन धारक भारत गैस एजेंसी के संचालक अमित के पास पहुंचे तो उन्होंने कई कनेक्शन धारकों को अभद्र भाषा के साथ टालमटोल कर यह कह दिया कि अपने-अपने खाते की केवाईसी कराओ तब तुम्हें गैस सिलेंडर मिलेगा वरना आपका गैस कनेक्शन काट दिया जाएगा। जबकि कनेक्शन धारक मार्च माह में केवाईसी करा चुके थे उसके बावजूद भी उन्हें गैस सिलेंडर न देकर दोबारा केवाईसी करने हेतु आदेश दिया गया।

सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से यह भी पता चला कि थाना बिनावर पुलिस के पास गैस एजेंसी संचालक डॉ अमित शर्मा के खिलाफ शिकायत पहुंचने पर गैस एजेंसी संचालक अमित को थाना बिनावर पुलिस ने अपने कब्जे में लेकर इस मामले में पूछताछ भी की। मामले में थाना बिनावर पुलिस के समक्ष गैस एजेंसी संचालक अमित ने कनेक्शन धारकों को गैस उपलब्ध कराने हेतु आश्वासन दिया है।

सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से यह भी पता चला है कि शुभ कृष्णा भारत गैस एजेंसी के संचालक डॉ अमित शर्मा कनेक्शन धारकों को 30 से लेकर 50 एक्स्ट्रा लेकर सिलेंडर दे रहे हैं वहीं कस्बा बिनावर में थाने के सामने शुभ कृष्णा हॉस्पिटल के नाम से एक हॉस्पिटल चला रहे हैं जिसकी आड़ में रात्रि के समय कस्बा बिनावर में स्थित दुकानदारों व अपने परिचितों को ब्लैक में गैस सप्लाई करने का काम कर रहे है। इस संबंध में बिनावर थाना प्रभारी निरीक्षक अरिहंत कुमार सिद्धार्थ से जानकारी ली तो उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र के कनेक्शन धारकों को गैस न मिलने की शिकायत थाना बिनावर पुलिस को प्राप्त हुई है, जिसमें गैस संचालक डॉ अमित शर्मा को थाने बुलाकर पूछताछ की गई है। अब देखना यह है कि इस मामले में योगी सरकार व जिले के उच्च अधिकारी शुभ कृष्णा भारत गैस एजेंसी के संचालक पर क्या कार्रवाई करते है।

जिला में एलपीजी गैस व पेट्रो पदार्थों को लेकर आपूर्ति सामान्य : डीसी

-आमजन घबराएं नहीं, मांग के अनुरूप जिला में एलपीजी गैस, पेट्रोल व डीजल उपलब्ध

परिवहन विशेष न्यूज

- अधिकारियों को नियमित गैस एजेंसियों के स्टॉक चेक करने के दिए निर्देश

झज्जर, 05 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि जिला में एलपीजी गैस सिलेंडर सहित पेट्रोल और डीजल की आपूर्ति पूरी तरह से सामान्य है और किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है। उन्होंने नागरिकों से आह्वान करते हुए कहा कि एलपीजी स्टाक की नियमित रूप से मॉनिटरिंग की जा रही है। नागरिक किसी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान नहीं दें। जिला में एलपीजी सिलेंडरों की दैनिक मांग 7500 है जबकि वर्तमान में लगभग 10 हजार से ज्यादा सिलेंडरों का स्टॉक उपलब्ध है।

डीसी ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा हेल्पलाइन नंबर 01251-254270 भी जारी किया गया है। इस हेल्पलाइन नंबर पर कोई भी एलपीजी गैस उपभोक्ता एलपीजी से संबंधित अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है। इसके अलावा विभाग की टीमें भी निरंतर फील्ड में रहकर एजेंसियों का निरीक्षण कर रही है। उन्होंने बताया कि खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा प्रवासी श्रमिकों और स्लम बस्तियों में रहने वाले कमजोर वर्ग के लोगों के लिए 5 किलोग्राम के सिलेंडर उपलब्ध कराने के लिए जिला प्रशासन के साथ कार्य किये जा रहे हैं।

डीसी ने आमजन से आह्वान किया है कि वे पैनिक न हो और सरकार व जिला प्रशासन द्वारा जारी की जा रही अधिकारिक सूचनाओं पर ही विश्वास करें। एलपीजी गैस के लिए लोगों को गैस एजेंसियों के बाहर लाइन में लगकर परेशान होने की जरूरत नहीं है। ऑनलाइन माध्यम से भी आसानी से गैस सिलेंडर की बुकिंग की जा सकती है। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन हर रोज स्टॉक व ट्रांजिट की रिपोर्ट ले रहा है। उन्होंने कहा कि अगर गैस सिलेंडरों, पेट्रोल व डीजल का अनावश्यक भंडारण और कालाबाजारी करता है तो उसके खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आमजन से भी आह्वान किया है कि यदि कोई व्यक्ति गैस सिलेंडरों, पेट्रोल व डीजल का अनावश्यक भंडारण और कालाबाजारी करता है तो उसकी सूचना तुरंत हेल्पलाइन नंबर या जिला प्रशासन को दें, ताकि ऐसा करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जा सके।

जन विश्वास (संशोधन प्रावधान) अधिनियम, 2026-दंड से विश्वास की ओर भारत की न्यायिक और आर्थिक नीति का ऐतिहासिक परिवर्तन -समग्र विश्लेषण

जन विश्वास (संशोधन प्रावधान) अधिनियम, 2026,डर आधारित शासन से विश्वास आधारित शासन की ओर एक निर्णायक बदलाव है

जन विश्वास (संशोधन प्रावधान) अधिनियम, 2026-एक विधायी परिवर्तन नहीं,बल्कि शासन की सोच में बदलाव का प्रतीक-जहां दंड आधारित नियंत्रण से हटकर विश्वास आधारित अनुपालन की दिशा में कदम बढ़ाया- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण लोकतंत्र में न्याय प्रणाली की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है,लंबित मामलों का अत्यधिक बोझ। वर्षों से अदालतों में करोड़ों मामले लंबित हैं,जिनमें से एक बड़ा हिस्सा ऐसे छोटे- छोटे तकनीकी या प्रक्रियात्मक उल्लंघनों से जुड़ा है,जिनका समाज पर गंभीर आपराधिक प्रभाव नहीं होता।इसी पृष्ठभूमि में केंद्र सरकार द्वारा पारित जन विश्वास (संशोधन प्रावधान) अधिनियम, 2026 एक ऐतिहासिक और संरचनात्मक सुधार के रूप में सामने आता है। यह केवल एक विधायी परिवर्तन नहीं,बल्कि शासन की सोच में बदलाव का प्रतीक है,जहां दंड आधारित नियंत्रण से हटकर विश्वास आधारित अनुपालन की दिशा में कदम बढ़ाया गया है। इस कानून के लागू होने से अनुमानतःलगभग 5 करोड़ तक छोटे-मोटे मामले समाप्त हो सकते हैं, जिससे न केवल न्यायपालिका पर दबाव कम होगा,बल्किनागरिकों और छोटे कारोबारियों को भी बड़ी राहत मिलेगी। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इस अधिनियम की मूल भावना है,छोटे अपराधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करना अर्थात डिक्रिमिनलाइजेशन लंबे समय से यह देखा गया है कि भारत में अनेक कानूनों में मामूली उल्लंघनों के लिए भी आपराधिक प्रावधान मौजूद थे,जिनके कारण लोगों को अनावश्यक रूप से पुलिस,कोर्ट और कानूनी प्रक्रियाओं के चक्रव्यूह में फंसना पड़ता था। इससे न केवल समय और संसाधनों की बर्बादी होती थी, बल्कि व्यवसायिक माहौल भी प्रभावित होता था।जन विश्वास अधिनियम 2026 इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है, जिसमें 23 मंत्रालयों के अंतर्गत आने वाले 79 केंद्रीय कानूनों में संशोधन किया गया है और लगभग 700 से अधिक प्रावधानों में जेल की सजा को हटाकर केवल आर्थिक दंड (जुर्माना) का प्रावधान किया गया है।

साथियों बात अगर हम यह विधेयक पहले लाए गए जन विश्वास विधेयक, 2025 का विस्तारित और अधिक व्यापक रूप है इसको समझने की करें तो, प्रारंभिक प्रस्ताव में जहां 17 कानूनों में संशोधन की बात थी, वहीं संसद की सेलेक्ट कमेटी की सिफारिशों के बाद इसका दायरा काफी बढ़ा दिया गया। यह विस्तार इस बात का संकेत है कि सरकार ने विभिन्न हितधारकों उद्योग, नागरिक समाज, विधि विशेषज्ञों और प्रशासनिक संस्थाओं की चिंताओं को गंभीरता से लिया और एक संतुलित कानून तैयार करने का प्रयास किया।इस प्रकार, यह अधिनियम केवल एक राजनीतिक पहल नहीं, बल्कि एक व्यापक परामर्श प्रक्रिया का परिणाम है।इस कानून का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है अपराधमुक्ति (डिक्रीमिनालिजेशन) लगभग 717 प्रावधानों को आपराधिक श्रेणी से बाहर कर दिया गया है, जिनमें पहले जेल की सजा का प्रावधान था। अब इन मामलों में केवल जुर्माना लगाया जाएगा। यह बदलाव विशेष रूप से छोटे व्यापारियों, स्टार्टअप्स और आम नागरिकों के लिए राहतकारी है क्योंकि वे अक्सर अनजाने में या तकनीकी कारणों से कानून का उल्लंघन कर बैठते थे और उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते थे।उदाहरण के लिए, ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण में देरी, जन्म या मृत्यु की सूचना समय पर न देना, या सार्वजनिक स्थानों पर मामूली नियमों का उल्लंघन इन सभी मामलों में अब जेल नहीं, बल्कि प्रशासनिक दंड का प्रावधान होगा।व्यापारिक दृष्टिकोण से यह कानून अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत लंबे समय से ईजी ऑफ़ डूइंग बिज़नेस यानें व्यापार करने की आसानी के क्षेत्र में सुधार करने का प्रयास कर रहा है। हालांकि, जटिल नियमों और कठोर दंडात्मक प्रावधानों के कारण छोटे और मध्यम उद्योगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता था। जन विश्वास अधिनियम 2026 इस दिशा में एक बड़ा कदम है, क्योंकि यह इंस्पेक्टर राज को सीमित करता है और व्यवसायियों को अनावश्यक डर से मुक्त करता है। अब मामूली तकनीकी त्रुटियों के लिए जेल जाने का खतरा नहीं होगा, जिससे उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा और निवेश का माहौल बेहतर होगा।

साथियों बात कर हम इसकानून के तहत कई प्रमुख क्षेत्रों में बदलाव किए गए हैं इसको समझने की करें तो उदाहरण के लिए,मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के अंतर्गत कुछउल्लंघनों में जेल की सजा को हटाकर जुर्माना कर दिया गया है। इसी प्रकार, ड्रग्स और कॉस्मेटिक्स कानून में भी कुछ तकनीकी उल्लंघनों के लिए जेल की जगह आर्थिक दंड का प्रावधान किया गया है, जो एक लाख रुपये तक हो सकता है। यह बदलाव विशेष रूप से उन छोटे व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण है जो जटिल अनुपालन आवश्यकताओं के कारण अक्सर कठिनाइयों का सामना करते थे।सार्वजनिक जीवन से जुड़े मामलों में भी इस कानून का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मेट्रो में धूम्रपान करना, सड़क संकेतों को नुकसान पहुंचाना या सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाना इन सभी मामलों में अब एफआईआर दर्ज करने के बजाय केवल जुर्माना लगाया जाएगा। इससे पुलिस और न्यायपालिका का समय बच सकेगा और वे गंभीर अपराधों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। यह परिवर्तन "स्मार्ट गवर्नेंस" की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जहां संसाधनों का उपयोग अधिक प्रभावी तरीके से किया जाता है।श्रम कानूनों में भी इस अधिनियम के तहत नरमी लाई गई है। उदाहरण के लिए, एप्रेंटिस एक्ट, 1961 के तहत पहले या दूसरे उल्लंघन पर अब सख्त कार्रवाई के बजाय चेतावनी या सलाह दी जाएगी। यह दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि सरकार अब दंड देने के बजाय सुधार और मार्गदर्शन पर अधिक जोर दे रही है। इससे उद्योगों और श्रमिकों के बीच बेहतर संबंध स्थापित हो सकते हैं और अनुपालन की संस्कृति को सटीक रूप से प्रोत्साहन मिल सकता है।

साथियों बात अगर हम इस कानून को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखें तो हालांकि, इस कानून के कई सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, इसके कुछ आलोचनात्मक पक्ष भी हैं। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि अत्यधिक डिक्रिमिनलाइजेशन से कानूनों का प्रभाव कमजोर हो सकता है और लोग नियमों को हल्के में लेने लग सकते हैं। यदि दंड केवल आर्थिक जुर्माने तक सीमित रह जाए, तो बड़े कारोबारी या संपन्न व्यक्ति इसे आसानी से वहन कर सकते हैं और नियमों का उल्लंघन जारी रख सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि जुर्माने की राशि उचित और प्रभावी हो, ताकि वह एकवास्तविक निवारक (डिटरेंट) के रूप में कार्य कर सके।इसके अतिरिक्त, इस कानून के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रशासनिक ढांचे को भी मजबूत करना होगा। केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि इसका सही तरीके से पालन हो। इसके लिए डिजिटल सिस्टम, पारदर्शी प्रक्रियाएं और जवाबदेही तंत्र विकसित करना होगा। यदि यह पहल सही तरीके से लागू की जाती है, तो यह भारत की न्याय प्रणाली में एक क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है।अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो कई विकसित देशों ने पहले ही इस प्रकार के सुधार अपनाए हैं, जहां छोटे उल्लंघनों के लिए आपराधिक दंड के बजाय प्रशासनिक दंड का प्रावधान होता है। इससे न केवल न्याय प्रणाली पर दबाव कम होता है, बल्कि नागरिकों और सरकार के बीच विश्वास भी बढ़ता है। भारत का यह कदम वैश्विक मानकों के अनुरूप है और यह दर्शाता है कि देश अपनी कानूनी प्रणाली को अधिक आधुनिक और प्रभावी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि,जन विश्वास (संशोधन प्रावधान) अधिनियम, 2026 भारत कीविधायी और प्रशासनिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह कानून न केवल न्याय प्रणाली को अधिक कुशल बनाने में सहायक होगा, बल्कि आर्थिक विकास को भी गति देगा।यह डर आधारित शासन से विश्वास आधारित शासन की ओर एक निर्णायक बदलाव है। हालांकि इसके सफल क्रियान्वयन के लिए सतत निगरानी, संतुलित नीति और मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था आवश्यक होगी, लेकिन यदि यह सभी तत्व सही तरीके से कार्य करते हैं, तो यह अधिनियम भारत को एक अधिक न्यायसंगत, पारदर्शी और व्यवसाय अनुकूल देश बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जिला की मंडियों में सरसों व गेहूं की खरीद जारी : डीसी

जिला की मंडियों में अब तक एक लाख 2 हजार 152 एमटी टन गेहूं और तीन सो छः मीट्रिक टन सरसों की आवक दर्ज

झज्जर, 05 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिला की मंडियों में रबी सीजन के तहत सरसों व गेहूं की खरीद प्रक्रिया सुचारू रूप से जारी है। प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार किसानों की उपज निर्धारित मानकों के अनुरूप खरीदी जा रही है और उनकी सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। अब तक जिले में कुल तीन सौ छह मीट्रिक टन सरसों की आवक दर्ज की गई है। वहीं जिले में 2 हजार 152 मीट्रिक टन गेहूं की आवक दर्ज हुई है।

डीसी ने खरीद एजेंसियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि किसानों को उपज का समय पर भुगतान किया जाए ताकि उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना न करना पड़े। लिफ्टिंग कार्य में तेजी लाई जाए ताकि मंडियों में जगह की कमी न हो और नई फसल की आवक बाधित न हो। खरीद एजेंसियों द्वारा स्टोरेज व्यवस्था को बेहतर ढंग से प्रबंधित किया जाए, जिससे खरीदी गई सरसों का सुरक्षित भंडारण किया जा सके। किसानों की सुविधा के लिए अनाज मंडियों में जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं।डीसी ने किसानों से अपील की कि वे अपने अनाज को तय मानकों के अनुसार सुखाकर ही मंडियों में लेकर आएं, ताकि उनकी उपज बिना किसी रुकावट के खरीदी जा सके। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि मंडियों में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो और सभी कार्य सुचारू रूप से संपन्न किए जाएं। बाक्स

निर्धारित एमएसपी पर की जा रही फसल खरीद

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि सरकार द्वारा गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2585 रुपये प्रति क्विंटल तथा सरसों का 6200 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भुगतान प्रक्रिया में किसी प्रकार की देरी न हो और पूरी पारदर्शिता के साथ राशि सीधे किसानों के खातों में भेजी जाए। जिला प्रशासन खरीद प्रक्रिया को सुचारू रखने के लिए लगातार निगरानी कर रहा है।

जन समस्याओं के समाधान के लिए आज लगेंगे समाधान शिविर

जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में सुबह 10 से 12 बजे तक आयोजित होंगे शिविर : डीसी

झज्जर, 05 अप्रैल। आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा आज (06 अप्रैल सोमवार को) जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर प्रातः: 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका मौके पर ही निपटान सुनिश्चित किया जाएगा। जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। इस दौरान उपायुक्त विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे तथा उपस्थित अधिकारियों को समस्याओं के समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे, ताकि आमजन को अनावश्यक भागदौड़ से राहत मिल सके। उपमंडल स्तर पर बेरी, बहादुरगढ़ और बादल में स्थित लघु सचिवालय परिसरों में संबंधित एसडीएम की अध्यक्षता में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधे संवाद का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, ताकि लोगों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का शीघ्र

आम चुनाव और उपचुनाव 2026 के दौरान 650 करोड़ रुपये से अधिक जब्त, चुनावी अनियमितताओं पर सख्ती

संगिनी घोष

आम चुनाव और उपचुनाव 2026 के दौरान अधिकारियों ने 650 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जब्त की है, जो चुनावी अनियमितताओं पर कड़ी निगरानी और सख्त कार्रवाई को दर्शाता है।

अधिकारियों के अनुसार, जब्त की गई सामग्री में नकदी, शराब, नशीले पदार्थ और अन्य प्रलोभन शामिल हैं, जिनका उपयोग मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए किया जाता है।

चुनाव के दौरान कड़ी निगरानी

यह बड़ी जब्ती सख्त निगरानी, उन्नत ट्रैकिंग सिस्टम और विभिन्न क्षेत्रों में रियल-टाइम मॉनिटरिंग के कारण संभव हो पाई है।

निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव पर जोर

प्रशासन ने स्पष्ट किया कि यह कार्रवाई लोकतांत्रिक प्रक्रिया की निष्पक्षता बनाए रखने और चुनावों में धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए की जा रही है।

कई एजेंसियों का समन्वय

केंद्र और राज्य स्तर की कई एजेंसियां मिलकर संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रख रही हैं और त्वरित कार्रवाई कर रही हैं।

देशभर में बढ़ी सतर्कता

यह जब्ती दर्शाती है कि चुनावी क्षेत्रों में सतर्कता बढ़ाई गई है और अवैध गतिविधियों पर सख्ती से नियंत्रण किया जा रहा है।

ऐसे देखें तो यह कदम चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता को मजबूत करने और लोकतंत्र में जनता के विश्वास को बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

मुख्य बिंदु

* आम चुनाव और उपचुनाव 2026 में 650 करोड़ रुपये से अधिक जब्त
* नकदी, शराब और नशीले पदार्थ शामिल
* निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करने पर जोर
* सख्त निगरानी और उन्नत ट्रैकिंग सिस्टम
* **कई एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय**

SEO Meta Description: आम चुनाव और उपचुनाव 2026 के दौरान 650 करोड़ रुपये से अधिक की जब्ती, चुनावों में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने की दिशा में बड़ा कदम।

नागरिक सुरक्षा विभाग की मासिक बैठक में प्रशिक्षण और विभागीय कार्यों की हुई समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा की वार्डन पोस्ट संख्या एक की मासिक समीक्षा बैठक औरंगाबाद स्थित आचार्य चरण महाप्रभु श्रीमद्वल्लभ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह बैठक प्रभारी अधिकारी अपर जिला अधिकारी (नमामि गंगे) नंद प्रकाश मौर्य, सहायक उपनियंत्रक, मुख्य वार्डन, उप-मुख्य वार्डन, प्रभागीय वार्डन, उप-प्रभागीय वार्डन और वरिष्ठ स्टाफ अधिकारी के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में आयोजित की गई। पोस्ट वार्डन एवं मास्टर ट्रेनर इंजीनियर अशोक यादव की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मुख्य रूप से स्वयंसेवकों की कार्यक्षमता बढ़ाने और विभागीय लक्ष्यों को समय पर पूरा करने पर जोर दिया गया। उच्चाधिकारियों के निर्देशों के अनुपालन में, सभी वार्डनों और स्वयंसेवकों को केन्द्रीय नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण संस्थान में होने वाले आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही, 'परिवार

पंजिका' के कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए इसे शीघ्र पूर्ण करने और प्रत्येक सेक्टर स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित करने की बात कही गई। इस महत्वपूर्ण बैठक में मुख्य रूप से मुकेश तिवारी, जितेन्द्र कुमार, हेमन्त, अविनाश कुमार सिंह, अरुण कुमार, दर्शन सिंह, राम सैनी, अनुज, नारायण सिंह, विनोद, ताहिर, गुलशेर, देवेन्द्र कुमार, धर्मेंद्र सैनी, पंकज, वर्षा, शुभम, राजेश, जयवीर, रोहित, सोहन लाल और नरेश सहित घटना नियंत्रक अधिकारी के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ वार्डन एवं कई स्वयंसेवक उपस्थित रहे। सभी ने नागरिक सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

आस्था, संस्कृति और विकास का अद्भुत संगम— 'भविष्य की अयोध्या'

डॉ. शंभु पंवार नई दिल्ली, 5 अप्रैल।

राजधानी के जनपथ स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में श्री अयोध्या न्यास द्वारा आयोजित आठवें "अयोध्या पर्व" का भव्य एवं गरिमामय आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में देशभर से आए साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष आयाम प्रदान किया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार बी.एल. गौड एवं डॉ. शैलेश शुक्ल की महत्वपूर्ण कृति "भविष्य की अयोध्या" का भव्य लोकार्पण किया गया। पुस्तक का विमोचन राम बहादुर राय (अध्यक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र), राकेश सिंह (मुख्य कार्यकारी अधिकारी, यमुना विकास प्राधिकरण एवं नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्रमुख) तथा लल्लू सिंह (पूर्व सांसद, अयोध्या) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

अपने उद्बोधन में राकेश सिंह ने "भविष्य की अयोध्या" के नगर नियोजन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अयोध्या में आधुनिक सुविधाओं का समावेश किया जाएगा, किंतु उसकी मूल आत्मा—भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक विरासत—अक्षुण्ण रहेगी। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा तैयार "विजन मॉडल 2047" में विकास और विरासत के संतुलन को प्राथमिकता दी गई है, जिससे अयोध्या वैश्विक स्तर पर एक आदर्श आध्यात्मिक एवं आधुनिक नगरी के रूप में स्थापित हो सके।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राम बहादुर राय, लल्लू सिंह तथा बी.एल. गौड ने भी अयोध्या के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व पर विचार व्यक्त किए और पुस्तक को समयानुकूल एवं दूरदर्शी कृति बताया।

समारोह में पूर्व प्रधान आयकर आयुक्त आर.एस. रावल, शिखा दरबारी, पूर्व संयुक्त सचिव विष्णु दरबारी, रोमिता नारंग सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम ने न केवल अयोध्या के भविष्य की विकास परिकल्पना को रेखांकित किया, बल्कि भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के समन्वय का सशक्त संदेश भी दिया।

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल उकलाना 34 वर्षों से शिक्षा को समर्पित:डॉ भुवनेश भारद्वाज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) :

शिक्षा के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल, उकलाना के प्रांगण में बीते दिन आज तीसरे चरण का एक भव्य 'स्कॉलरशिप सर्टिफिकेट वितरण समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उन सभी मेधावी छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिन्होंने हाल ही में आयोजित स्कॉलरशिप टेस्ट में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था। आज 5अप्रैल 2026 को तीसरे चरण के स्कालरशिप टेस्ट के परिणाम घोषित का आयोजन किया गया। समारोह की खास बात यह रही कि विद्यार्थी आज भी अपने अभिभावकों के साथ इस गौरवपूर्ण क्षण के साक्षी बने।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल उकलाना मण्डी के प्रिंसीपल डॉ. भुवनेश भारद्वाज ने विद्यालय का भविष्योन्मुखी विजन साझा किया। उन्होंने कहा कि ऑक्सफोर्ड स्कूल ने एम्बीशन इंस्टीट्यूट, हिसार के साथ हाथ मिलाया है।

अब विद्यार्थियों को स्कूल स्तर से ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाएगा। NEET, JEE और अन्य कॉम्पिटिशन एग्जाम्स की तैयारी के लिए अब बच्चों को दूर दराज के शहरों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी आपका समय ओर पैसा दोनों बचेगा। प्रिंसीपल डॉ भुवनेश भारद्वाज ने अभिभावकों से कहां कि ऑक्सफोर्ड स्कूल उकलाना 34 वर्षों से उकलाना को शिक्षा नगरी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है स्कूल के चेयरमैन डॉ सतीश भारती के मार्गदर्शन में उकलाना क्षेत्र में शिक्षा को उच्चतम स्तर पर पहुंचना हमारा उद्देश्य है ऑक्सफोर्ड स्कूल उकलाना के आज हजारों विद्यार्थी देश विदेश में अच्छे-अच्छे पदों को सुशोभित कर समाज व राष्ट्रसेवा में अपना योगदान दे रहे हैं!

इस अवसर पर विद्यालय के मार्केटिंग हेड श्री गणेश मेहता ने भी अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि मैने विद्यालय के विकास को केवल एक संस्था के रूप में नहीं बल्कि एक मिशन के रूप में देखा हैं उन्होंने विद्यालय की नई पहल के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि कैसे यह कदम बच्चों के करियर को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगा।

स्कॉलरशिप टेस्ट क्वालीफाई करने वाले विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों सहित मंच पर आमंत्रित किया गया। स्कूल प्रिंसिपल द्वारा उन्हें स्कॉलरशिप सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। अपने बच्चों की इस उपलब्धि पर अभिभावकों की आँखों में गर्व के आँसू और चेहरे पर मुस्कान साफ देखी जा सकती थी।

उपस्थित अभिभावकों ने ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल उकलाना की इस सराहनीय पहल की बहुत बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि विद्यालय मैनेजमेंट का यह निर्णय सराहनीय है कि उनके बच्चों को घर के पास ही विश्वस्तरीय और अत्याधुनिक शैक्षणिक सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। इस अवसर पर अभिभावको और विद्यार्थियों के सम्मान में खान-पान की व्यवस्था भी की गई!

बरवाला में रमेश बैटरीवाला के कार्यालय पहुंचे निदेशक डॉ. वीरेंद्र चौहान, स्वागत के साथ मनाया

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)

हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक एवं गृह मंत्रालय भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान के बरवाला आगमन पर नगर परिषद अध्यक्ष रमेश बैटरीवाला के कार्यालय में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर चेयरमैन रमेश बैटरीवाला ने एवं मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा ने उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया और उनके सम्मान में एक सादगीपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. चौहान का जन्मदिवस भी बड़े ही उत्साह और खुशी के साथ केक काटकर मनाया गया। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं कार्यकर्ताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं और उनके दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। इसके पश्चात एक प्रेस वार्ता आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता नगर परिषद बरवाला के चेयरमैन रमेश बैटरीवाला ने की।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि वे हिसार स्थित गुरु जम्भेश्वर विज्ञान विश्वविद्यालय में आयोजित 'अक्षरम' कार्यक्रम में भाग लेकर लौट रहे थे और इसी दौरान उन्हें बरवाला आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान द्वारा प्रदेश के पंच, सरपंच, जिला परिषद सदस्यों एवं ब्लॉक समिति के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण देकर ग्राम स्तर पर प्रशासनिक क्षमता को सुदृढ़ किया जा रहा है। उनका उद्देश्य ग्राम पंचायतों को और अधिक मजबूत, सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि गांवों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सबसे बड़ी आवश्यकता ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाने की है। इसके लिए संस्थान निरंतर प्रयासरत है और जनप्रतिनिधियों को आधुनिक प्रशासन, पारदर्शिता एवं विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

डॉ. चौहान ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि विपक्ष द्वारा वीबी जीरामजी के संबंध में किए जा रहे दुष्प्रचार को लेकर समाज के प्रत्येक वर्ग को जागरूक करने की आवश्यकता है, ताकि सत्य को सामने लाया जा सके और भ्रांतियों को दूर किया जा सके।

उन्होंने हरियाणा में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार पर भी जोर देते हुए कहा कि सभी सरकारी विभागों—चाहे वे खंड स्तर के हों, जिला स्तर के या प्रदेश मुख्यालय—में पत्राचार हिन्दी में ही होना चाहिए, जिससे आमजन को समझने में सुविधा हो और हमारी भाषा को सम्मान मिले।

डॉ. चौहान ने देसी हरियाणवी रहन-सहन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी पारंपरिक जीवनशैली स्वास्थ्य, सादगी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि देसी खान-पान, पहनावा और जीवनशैली अपनाने से व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है और मानसिक संतुलन भी बेहतर बना रहता है। हरियाणवी वेशभूषा जैसे धोती-कुर्ता, पगड़ी, दुपट्टा एवं पारंपरिक परिधान न केवल हमारी संस्कृति की पहचान हैं, बल्कि ये मौसम के अनुकूल, आरामदायक और भारतीयता को दर्शाने वाले भी हैं। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं पर गर्व करें और उन्हें अपनाएं।

उन्होंने कहा कि आज के आधुनिक दौर में जहां पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है, वहीं हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहना और अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखना बेहद आवश्यक है।

इस अवसर पर स्थानीय गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि एवं अन्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सफल बनाया।इस अवसर पर पूर्व पार्षद विक्की रहेजा, प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय सेवा संघ महेन्द्र सेतिया, जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा, खबरों का सागर समाचार पत्र के संपादक जगदीश असीजा, अधिवक्ता उमेश कौशिक, मास्टर केवल कृष्ण आर्य, अधिवक्ता मनुज सरदाना, आईटी टीम सदस्य तरसेम पूनिया, सतीश सरदाना, पत्रकार कपिल महता एवं कृष्ण सलूजा, चार्ल्स भल्ला सहित अनेकों गणमान्य जन उपस्थित रहे।

नन्हा फ़ोन वाला

नन्हा-मुन्ना बच्चा आया,
हाथ में फ़ोन उठाया।
हैलो-हैलो बोल रहा है,
जैसे दुनिया से बतियाया।

कभी इधर तो कभी उधर देखे,
को k?
आँखों में सपने झिलमिलाए,
किससे बात कर रहा है ये,
सबको हँसते-हँसते बतलाए।

मम्मी को शायद कॉल लगाया,
या पापा को याद किया,
छोटे-छोटे हाथों से उसने,
बड़ा सा काम आज किया।

प्यारी उसकी ये अदाएँ,
सबका दिल खुश कर जाएँ,
नन्हा फ़ोन वाला बच्चा,
सबको हँसना सिखलाए।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

विशेषज्ञों की कमी: बच्चों को एआई के लिए कैसे तैयार किया जाए

● डॉ. विजय गर्ग

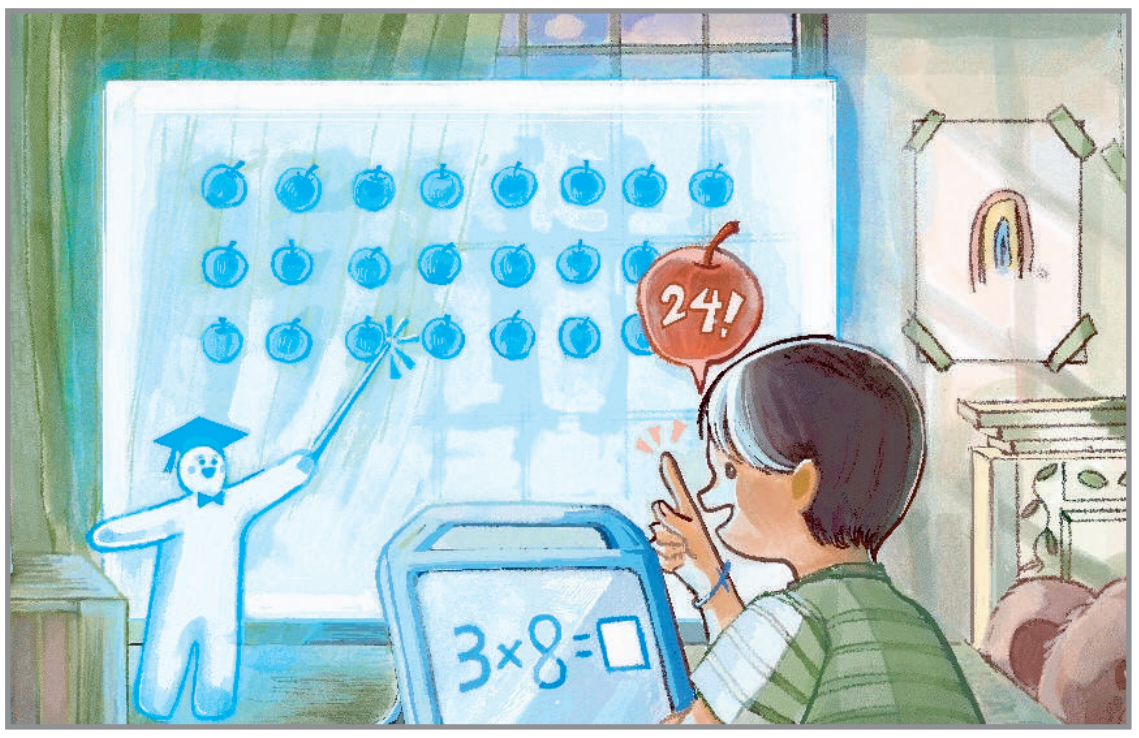

एआई एक उच्च स्तरीय क्षेत्र है जिसमें गणित, तर्क, डेटा और प्रोग्रामिंग की समझ की आवश्यकता होती है। लेकिन कई कारणों से विशेषज्ञों की कमी हो रही है:

आधुनिक युग में क्रिट्रिम बुद्धि तेजी से हर क्षेत्र को बदल रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और रोजगार तक। लेकिन इस परिवर्तन के साथ एक बड़ी चुनौती भी सामने आ रही है। जब तकनीक आगे बढ़ रही है, तो उसी गति से कुशल मानव संसाधन विकसित नहीं हो रहे हैं। एसए में सबसे बड़ा सवाल यह है: क्या हम अपने बच्चों को एआई के भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं?

विशेषज्ञों की कमी क्यों?

एआई एक उच्च स्तरीय क्षेत्र है जिसमें गणित, तर्क, डेटा और प्रोग्रामिंग की समझ की आवश्यकता होती है। लेकिन कई कारणों से विशेषज्ञों की कमी हो रही है:

स्कूलों में अभी भी पुराना पाठ्यक्रम

व्यावहारिक और अनुभव-आधारित शिक्षा की कमी

प्रौद्योगिकी तक समान पहुंच का अभाव

शिक्षकों के प्रशिक्षण में कमी

बच्चों को एआई के लिए तैयार करने की आवश्यकता

भविष्य में कई कार्य AI से जुड़े होंगे। इसलिए बच्चों को न केवल पाठ्यपुस्तक ज्ञान सिखाया जाना चाहिए, बल्कि सोचने और समस्या समाधान करने की क्षमता भी सिखाई जानी चाहिए।

(आलोचनात्मक सोच) (रचनात्मकता) (डिजिटल साक्षरता) (परिवर्तन के साथ स्वयं को ढालना) स्कूलों की भूमिका

स्कूलों को अपनी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना होगा:

नया पाठ्यक्रम

इसमें एआई, कोडिंग और डेटा साइंस जैसे विषय शामिल हैं।

व्यावहारिक शिक्षा

सिर्फ सिद्धांत नहीं, बल्कि परियोजनाओं और अनुभवों के माध्यम से सीखना।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

शिक्षकों को नई प्रौद्योगिकियों से परिचित कराना। माता-पिता की भूमिका

बच्चों को एआई के लिए तैयार करने में माता-पिता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:

बच्चों को तकनीक से परिचित कराना

उन्हें प्रश्न पूछने और नया सीखने के लिए प्रेरित करना

स्क्रीन टाइम का संतुलन बनाए रखना

सरकार और समाज की जिम्मेदारी

डिजिटल संरचना को मजबूत करना

गांवों और शहरों में समान शिक्षा के अवसर

युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम

मानवीय मूल्यों का महत्व

एआई के युग में भी मानवीय मूल्यों का महत्व कम नहीं होता।

सहायक

नैतिकता

जिम्मेदारी

ये गुण बच्चों को न केवल एक अच्छा पेशेवर बनाते हैं, बल्कि एक अच्छा इंसान भी बनाते हैं।

निश्चिंत

विशेषज्ञों की कमी न केवल एक समस्या है, बल्कि नववीं पीढ़ी को तैयार करने का अवसर भी है। यदि हम आज से ही बच्चों को सही दिशा में शिक्षा और मार्गदर्शन दें, तो वे न केवल AI के साथ कदम रख सकेंगे, बल्कि उसे नया आकार भी दे सकेंगे।

भविष्य की दुनिया में सफलता उन लोगों को मिलेगी जो न केवल प्रौद्योगिकी का उपयोग करेंगे, बल्कि उसे समझेंगे और उसका निर्माण करेंगे।

संपादकीय

चिंतन-मनन

जटिल बीमारियों में देखभाल का सवाल

डॉ विजय गर्ग

आज के समय में स्वास्थ्य सेवाओं की प्रगति ने अनेक बीमारियों के उपचार को संभव बना दिया है, लेकिन जब बात जटिल बीमारियों की आती है—जैसे कैंसर, अल्ज़ाइमर, पार्किंसन या गुर्दा विफलता—तो केवल इलाज ही नहीं, बल्कि समग्र देखभाल का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण बन जाता है।

जटिल बीमारियाँ अक्सर लंबी अवधि तक चलती हैं, मरीज की शारीरिक क्षमता को प्रभावित करती हैं और मानसिक व सामाजिक जीवन पर भी गहरा असर डालती हैं। ऐसे में इलाज से अधिक ज़रूरी हो जाता है—संवेदनशील, निरंतर और बहुआयामी देखभाल।

देखभाल क्यों बनती है सबसे बड़ी चुनौती?

जटिल बीमारियों में उपचार एक लंबी प्रक्रिया होती है, जिसमें कई स्तरों पर चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. लंबी अवधि और अनिश्चितता

इन बीमारियों का इलाज महीनों या वर्षों तक चल सकता है। कई बार पूर्ण इलाज संभव नहीं होता, केवल स्थिति को नियंत्रित किया जा सकता है।

2. आर्थिक बोझ

दवाइयाँ, जांच, अस्पताल में भर्ती और विशेष देखभाल—इन सबका खर्च आम परिवारों के लिए भारी पड़ता है।

3. मानसिक दबाव

मरीज ही नहीं, परिवार के सदस्य भी तनाव, चिंता और अवसाद का सामना करते हैं।

परिवार की भूमिका

भारतीय समाज में परिवार ही देखभाल का सबसे बड़ा आधार होता है।

घर के सदस्य मरीज की दिन-रात देखभाल करते हैं

भावनात्मक सहारा देते हैं

उपचार के फैसलों में भाग लेते हैं

लेकिन कई बार यह जिम्मेदारी थकान, आर्थिक दबाव और मानसिक तनाव का कारण भी बन जाती है।

स्वास्थ्य व्यवस्था की जिम्मेदारी

जटिल बीमारियों के लिए केवल अस्पताल पर्याप्त नहीं हैं। जरूरत है एक मजबूत और संवेदनशील स्वास्थ्य व्यवस्था की:

1. समन्वित उपचार

डॉक्टर, नर्स, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ता मिलकर मरीज की देखभाल करें।

2. पालीएटिव केयर

जब बीमारी पूरी तरह ठीक नहीं हो सकती, तब दर्द और तकलीफ को कम करना ही मुख्य उद्देश्य होता है।

3. घर आधारित देखभाल

हर मरीज को अस्पताल में रखना संभव नहीं, इसलिए घर पर ही चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना आवश्यक है।

तकनीक की भूमिका

आधुनिक तकनीक ने देखभाल को कुछ हद तक आसान बनाया है:

लेकिन यह सुविधाएँ अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में पूरी तरह उपलब्ध नहीं हैं।

नैतिक और सामाजिक प्रश्न

जटिल बीमारियों में देखभाल के साथ कई नैतिक प्रश्न भी जुड़े होते हैं:

मरीज की इच्छा बनाम परिवार का निर्णय

जीवन को लंबा करने और जीवन की गुणवत्ता के बीच संतुलन

अंतिम समय की देखभाल

समाधान की दिशा

इस समस्या का समाधान बहुस्तरीय प्रयासों से ही संभव है:

सरकारी स्तर पर: सस्ती स्वास्थ्य सेवाएँ और बीमा योजनाएँ

समाज स्तर पर: जागरूकता और सहयोग

व्यक्तिगत स्तर पर: मरीज के प्रति सहानुभूति और धैर्य

निष्कर्ष

जटिल बीमारियों में देखभाल का सवाल केवल चिकित्सा का नहीं, बल्कि मानवता, संवेदना और सामाजिक जिम्मेदारी का है।

इलाज शरीर को ठीक करने का प्रयास करता है, लेकिन देखभाल मरीज के जीवन को गरिमा, सुकून और सम्मान प्रदान करती है।

इसलिए आवश्यक है कि हम एक ऐसी व्यवस्था विकसित करें, जहाँ हर जटिल बीमारी से जूझ रहा व्यक्ति न केवल उपचार पाए, बल्कि सार्थक और सम्मानजनक जीवन जी सके।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त

चुनाव आयोग बनाम डिजिटल प्रचार : क्या नियम अप्रासंगिक हो चुके हैं?

(आलेख : पीए कृष्णन, अनुवाद : निशांत)

समकालीन भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में 'वैकल्पिक इतिहास' बेचने वाले लोग अपनी पसंद के मुताबिक तथ्यों को संदर्भ से काटकर पेश करने में माहिर हो गए हैं, ताकि एक खास तरह की कहानी को सही ठहराया जा सके। एक शोरगुल भरी प्रचार मशीन के हावी होने के कारण, सबसे बेबुनियाद दावे भी सच जैसे लगने लगते हैं।

इसका एक प्रमुख उदाहरण वह बार-बार दोहराया जाने वाला आरोप है, जो सरकार के उच्च स्तरों से लेकर सोशल मीडिया ट्रोल्स तक फैलाया जाता है कि 1946 में जवाहरलाल नेहरू ने 'धोखा देकर' सरदार वल्लभभाई पटेल से प्रधानमंत्री पद छीन लिया था। यह सिर्फ एक ऐतिहासिक गलती नहीं है, बल्कि एक खतरनाक झूठ है, जिसे सच की तरह पेश किया जाता है, ताकि भारत के पहले प्रधानमंत्री की विरासत को कमजोर किया जा सके।

'नेहरू बनाम पटेल' का विमर्श दरअसल एक विभाजनकारी औज़ार है, जिसका इस्तेमाल वे लोग करते हैं, जो अतीत को अपने हिसाब से गढ़ना चाहते हैं, क्योंकि वे उन नेताओं की समावेशी सोच का मुकाबला नहीं कर सकते, जिन्होंने वास्तव में देश का भविष्य बनाया।

सच क्या था?

मई 1945 में यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध ख़त्म होने के कगार पर था, और कांग्रेस के वे नेता, जो अगस्त 1942 से जेल में थे, उन्हें जून 1945 में रिहा किया जा रहा था। वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अंतरिम सरकार के प्रस्ताव पर चर्चा के लिए शिमला सम्मेलन बुलाया। हालांकि, यह बातचीत विफल हो गई, क्योंकि मोहम्मद अली जिन्ना इस बात पर अड़े रहे कि मुस्लिम लीग ही भारत के मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि है। यह दावा कांग्रेस स्वीकार नहीं कर सकती थी, क्योंकि वह सभी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती थी।

1945 नज़दीक आ रहा था, तभी ब्रिटिश सरकार, जिसका नेतृत्व क्लेमेंट एटली की लेबर पार्टी कर रही थी, ने भारत में आम चुनावों की घोषणा कर दी। ये चुनाव गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 के अंतर्गत हुए। चूंकि ब्रिटिश सरकार ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग को स्वीकार नहीं किया था, इसलिए मतदान का अधिकार केवल नागरिकता के आधार पर नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर तय किया गया था।

केवल 17 प्रतिशत आबादी ही मतदान करने के योग्य थी। हालांकि कुछ महिलाओं को, यदि वे निर्धारित मानदंडों को पूरा करती थीं या किसी मतदाता की पत्नी थीं, वोट देने का अधिकार मिला, लेकिन पाबंदियां इतनी कड़ी थीं कि 1% से भी कम वयस्क महिलाएं मताधिकार पा सकीं।

यह भी दर्ज करना आवश्यक है कि जहां कांग्रेस सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के पक्ष में थी, वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) इसका पूरी तरह विरोध कर रहा था।ओ

कांग्रेस ने 'जनरल' सीटों पर भारी जीत हासिल की (लगभग 90%), जिससे यह साबित हुआ कि वह गैर-मुस्लिम आबादी की निर्विवाद पसंद थी। कांग्रेस पार्टी का पूरा चुनाव अभियान लगभग अकेले ही जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में चला। उनकी असाधारण शारीरिक मेहनत और बड़े पैमाने पर जनजागरण के कारण उनका यह चुनाव अभियान किंवदंती बन गया।

अक्टूबर 1945 से फरवरी 1946 के बीच उन्होंने इस चुनाव को आज़ादी के मुद्दे र एक तरह के व्यक्तिगत जनमत-संग्रह में बदल दिया। उन्होंने चार महीने से भी कम समय में लगभग 30,000 मील की यात्रा की, हर संभव साधन से : छोटे चार्टर्ड विमान, ट्रेनें (अक्सर दरवाज़े पर खड़े होकर लोगों का अभिवादन करते हुए), खुली छत वाली कारें, और दूर-दराज़ के गांवों में बैलगाड़ियां भी।

इसी दौरे के दौरान प्रेस ने यह रिपोर्ट करना शुरू किया कि सैकड़ों हजार लोग केवल उनकी एक झलक पाने के लिए घंटों तक धूप या बारिश में इंतज़ार करते थे। अनुमान है कि इस अवधि में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से एक करोड़ से अधिक लोगों को संबोधित किया। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय मीडिया ने जल्दी ही यह नोटिस किया कि आम लोग नेहरू में स्वतंत्र भारत के भावी नेता को देख रहे थे।

न्यूयॉर्क टाइम्स (11 मई 1946) : 'कांग्रेस की भारी बहुमत से जीत के साथ भारत के प्रथम प्रधानमंत्री को लेकर अब कोई संशय नहीं है। यही वो व्यक्ति हैं जिसे ब्रिटिश हुकूमत अंततः सरकार की कमान सौंपेगी।

द टाइम्स (लंदन) : 'पंडित नेहरू केवल एक पार्टी नेता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक नए एशिया के प्रतीक के रूप में उभरे हैं। उनका उभार यह पुष्टि करता है कि नई दिल्ली की सत्ता के उत्तराधिकारी वही हैं।'

टाइम मैगज़ीन : 'ह्वह व्यक्ति, जिसके हाथों में किसी भी अन्य से अधिक, मानव

जाति के पांचवें हिस्से का भविष्य निहित है।'

द न्यूज़ क्रॉनिकल (लंदन) ने उन्हें 'भारत का बेताज बादशाह' बताया। द मैनचेस्टर गार्डियन ने उन्हें 'एक राष्ट्र की वैध आवाज़' कहा।

हिंदुस्तान टाइम्स : 'यह भारी जीत जवाहरलाल नेहरू की व्यक्तिगत जीत है। उनके अथक अभियान ने साबित कर दिया है कि वही इस राष्ट्र की धड़कन और उसका नियत नेता हैं।'

अमृत बाज़ार पत्रिका : 'नेतृत्व की ज़िम्मेदारी उन कंधों पर आई है, जो इसे उठाने के लिए सबसे अधिक सक्षम हैं। पंडित नेहरू में भारत को अपना आधुनिक निर्माता और भावी प्रधानमंत्री मिलता है।'

यहां तक कि लॉर्ड वेवेल, जो नेहरू के बड़े प्रशंसक नहीं थे, ने भी अपनी डायरी में माना कि नेहरू की लोकप्रियता अब ऐसी ताकत बन चुकी है, जिसे रोका नहीं जा सकता। उन्होंने लिखा कि अंतरिम सरकार का नेतृत्व करने के लिए नेहरू ही ऐसे नेता थे, जिनके पास 'जनसमर्थन और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा' दोनों मौजूद थे। पूरी दुनिया में इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं था कि स्वतंत्र भारत का नेतृत्व नेहरू ही करेंगे।

'अराजकता से भी बढ़कर भ्रम का दौर'

लेकिन आगे चलकर भारत कौन सा आकार लेगा, इस बात का अनुमान लगाना किसी के लिए भी आसान नहीं था। उस वर्ष की घटनाएं बेहद उथल-पुथल भरी थीं। आईएनए के मुकदमे मई 1946 तक चलते रहे और फरवरी में नौसेना के सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। मार्च और जून के बीच में कैबिनेट मिशन का भारत आना हुआ, उसके समूह बनाने के प्रस्ताव एक कमजोर भारतीय संघ की ओर इशारा करते थे, जिसमें प्रांतों को ज्यादा ताकत मिलती।

इसी के साथ, जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग को लेकर 16 अगस्त 1946 को 'डायरेक्ट एक्शन डे' का ऐलान किया। इसके बाद जो हिंसा भड़की, वह बेहद भयावह थी और आने वाली त्रासदी की आहट दे रही थी।

इन बढ़ती उलझनों के दौर में कांग्रेस ने अपना अध्यक्ष चुनने का फैसला किया। सामान्यतः कांग्रेस हर साल नया अध्यक्ष चुनती थी, इसलिए यह पद काफी हद तक औपचारिक माना जाता था। युद्ध के कारण 1940 से 1946 के बीच कोई वार्षिक अधिवेशन नहीं हुआ था और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद सात वर्षों तक अध्यक्ष बने रहे। जब नामांकन किए गए, तब 'प्रधानमंत्री' जैसे किसी विशेष पद का सवाल नेताओं के दिमाग में दूर-दूर तक नहीं था।

नेहरू की जीवनी में सर्वपल्ली गोपाल लिखते हैं : 'इसके तुरंत बाद, जवाहरलाल को आज़ाद के बाद कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गयाह्व लेकिन बाद में इस चुनाव को अलग तरीके से परिभाषित किया जाने लगा। इस पूरी प्रक्रिया को प्रधानमंत्री पद के लिए पटेल, जिनकी कांग्रेस पार्टी की मशीनरी पर मजबूत पकड़ के आधार पर इस पद की प्रबल दावेदारी थी, को बेदखल कर जवाहरलाल नेहरू का रास्ता आसान बनाने के लिए एक गांधीवादी तकनीक के तौर पर देखा जाने लगा। लेकिन उस वक्त इस पूरे घटनाक्रम को कोई भी इस तरह से नहीं देख रहा था। 1946 की गर्मियों में कांग्रेस की अध्यक्षता को हड़बड़ी में पद पर कब्जे के बजाय एक त्वरित ज़िम्मेदारी के तौर पर देखा जा रहा था।'

वर्किंग कमिटी के तत्कालीन सदस्य जेबी कृपलानी गांधी पर अपनी किताब में लिखते हैं : 'गांधीजी ने पहले ही यह इच्छा जताई थी कि उस समय जवाहरलाल को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाए। गांधीजी ने उनके नाम की सिफारिश क्यों की, इसके कारण, जहां तक मुझे याद है, उन्होंने नहीं बताए थे। प्रस्तावों को एआईसीसी कार्यालय में जमा करने की अंतिम तारीख नजदीक आ रही थी। अध्यक्ष के नाम का प्रस्ताव रखने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के केवल पंद्रह सदस्यों की आवश्यकता होती है। कुछ दिन पहले दिल्ली में वर्किंग कमेटी की बैठक हो रही थी। मैंने एक कागज़ घुमाया, जिसमें जवाहरलाल के नाम का प्रस्ताव रखा। वर्किंग कमेटी के सदस्यों ने उस पर हस्ताक्षर किए, और साथ ही एआईसीसी के कुछ स्थानीय सदस्यों ने भी। इस तरह जवाहरलाल का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित हुआ। इसके बाद अन्य लोगों ने अपने नाम वापस ले लिए। यह तय था कि अगर जवाहरलाल का नाम प्रस्तावित नहीं किया जाता, तो सरदार (पटेल) अध्यक्ष चुने जाते। सरदार ने मेरे इस हस्तक्षेप को पसंद नहीं किया। बाद में मैंने सोचा कि क्या मुझे, एक महासचिव के तौर पर, गांधीजी की इच्छा के अनुसार जवाहरलाल के नाम का प्रस्ताव रखने में भूमिका निभानी चाहिए थी। लेकिन उस समय मुझे नहीं लगा कि यह कोई बहुत महत्वपूर्ण मामला है। कांग्रेस का अध्यक्ष वर्किंग कमेटी का चेयरमैन होता है। वह 'बराबरों में पहला' होता है। कोई भी महत्वपूर्ण फैसला वर्किंग कमेटी के बिना नहीं लिया जा सकता। साथ ही, मुझे यह भी नहीं लगा कि स्वतंत्रता, किसी भी रूप में, इतनी निकट है। मुझे लगा कि अभी हमें कई और संघर्ष करने होंगे। लेकिन भविष्य का अनुमान कौन लगा सकता है? ऐसे दिखने में मामूली घटनाओं पर ही व्यक्तियों और यहां तक कि राष्ट्रों का भाग्य निर्भर करता है।'

राजमोहन गांधी ने पटेल की अपनी जीवनी में डीपी मिश्रा, जो सरदार के प्रबल समर्थक थे, का हवाला देते हुए लिखा है : 'जब हमनेह्व कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में (पटेल को) नेहरू पर प्राथमिकता दी, तो हमारा कोई इरादा नेहरू को भविष्य के प्रधानमंत्री पद से वंचित करने का नहीं थाह्व जहां तक भारत के प्रधानमंत्री पद का सवाल है, हमारे मन में हमेशा एक धुंधला-सा विचार था किह्व आज़ादी की सुबह में उस ऊंचे पद पर नेहरू का ही आसीन होना तय है।'

इससे स्पष्ट है कि 1946 में कांग्रेस के भीतर कोई भी यह नहीं मानता था कि कांग्रेस अध्यक्ष बनना अपने आप भारत के प्रधानमंत्री पद तक पहुंचने का रास्ता तय कर देगा।

नेहरू को गांधी ने क्यों चुना?

कारण बहुत ही साधारण और रणनीतिक रूप से ठोस था। गांधी को ये विश्वास था कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए नेहरू किसी भी और नेता से अधिक योग्य थे। नेहरू कांग्रेस के समाजवादी और प्रगतिशील धड़े का चेहरा थे, और उन्हें शीर्ष पर बिठाकर गांधी ने ये सुनिश्चित कर लिया कि भारतीय युवाओं की अस्थिर ऊर्जा मुख्यधारा की कांग्रेस में ही निहित रहे।

हम ये भूल जाते हैं कि कांग्रेस तब भी मुस्लिम बहुल प्रांतों को रिझाने में लगी हुई थी, और अखंड भारत के निर्माण को लेकर आशावान थी। हमेशा की तरह गांधी ने भारत और इसके लोगों के बारे में सोचा। नेहरू को उनकी एकमात्र पसंद बनना ही था। 1946 की गर्मियों में कांग्रेस की अध्यक्षता कांटों से भरा ताज था, न कि कोई पुरस्कार।

वायसराय ने 12 अगस्त 1946 में जब कांग्रेस अध्यक्ष को सरकार के गठन के लिए औपचारिक तौर पर आमंत्रित किया, तब नेहरू अकेले ही नहीं चले गए। कांग्रेस वर्किंग कमिटी (सीडबल्यूसी) ने एक सब कमिटी की नियुक्ति की, जिसमें नेहरू, पटेल, आज़ाद और प्रसाद के नाम शामिल थे। इस कमिटी ने बहुत ही विस्तार से विभिन्न हितों का संतुलन बनाने हेतु विचार-विमर्श किया, जैसे नियमित कांग्रेसी, अल्पसंख्यक प्रतिनिधियों (सिख, पारसी, भारतीय ईसाई), और दलित।

महत्वपूर्ण रूप से ऐसा कोई भी नियम नहीं, था जो ये कहता था कि केवल पार्टी प्रमुख ही सरकार का नेतृत्व कर सकते हैं। कांग्रेस को किसी भी नाम का सुझाव देने की पूरी स्वतंत्रता थी। ब्रिटिश संसद में जहां विंस्टन चर्चिल प्रधानमंत्री के तौर पर कार्य कर रहे थे, वहीं नेविल चेम्बरलेन ने कंजरवेटिव पार्टी के मुखिया के रूप में अपना काम जारी रखा। प्रधानमंत्री बनने बाद नेहरू ने भी अध्यक्ष पद त्याग दिया था। इसके बाद कृपलानी ने इस अध्यक्षता संभाली थी।

आज के पुनरीक्षणवादियों द्वारा जवाहरलाल नेहरू को सत्ता हड़पने वाले व्यक्ति के रूप में पेश करने का प्रयास, भारतीय लोगों की बुद्धिमत्ता और स्वतंत्रता के संघर्ष की प्रामाणिकता का सोच-समझ और सुनियोजित तरीक़े से किया गया अपमान है। यह बताना कि सरदार पटेल के साथ धोखा हुआ, इस बात के दस्तावेज़ी प्रमाण को भी नज़रअंदाज़ करना है कि पटेल के कट्टर समर्थक भी नेहरू को नए राष्ट्र की न्यायसंगत आवाज़ और नियति के नेता के रूप में देख रहे थे।

पटेल एक बहुत ही अनुशासित और संगठनात्मक प्रतिभा के व्यक्ति थे, लेकिन वो यथार्थवादी भी थे, जिन्हें राष्ट्र निर्माण जैसे कठिन कार्य के लिए अनिवार्य रूप से नेहरू के करिश्माई व्यक्तित्व का एहसास था। ये दो व्यक्ति सत्ता के किसी खेल के प्रतिद्वंद्वी नहीं थे। वे वक्त और परिस्थितियों के साझेदार थे।

भाजपा के द्वारा बेची जा रही पटेल के साथ हुए अन्याय की झूठी कहानी सरदार को आदर देने की नहीं, बल्कि उनकी स्मृतियों को हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर उस धर्मनिरपेक्ष और प्रजातांत्रिक बुनियाद को बर्बाद करने की है, जिसे नेहरू ने डाली।

इतिहास को जब पूरे तौर पर और संदर्भों के साथ पढ़ा जाता है, तब एक सामूहिक ज़िम्मेदारी की कहानी सामने आती है, न कि किसी पद के किसी तुच्छ चोरी की कहानी। अब वो वक्त आ गया है कि अतीत की दस्तावेज़ी आवाज़ को दबाने के लिए हो रहे प्रोपगैंडा के शोर को हम अनुमति देना बंद करें।

(साभार : द वायर। पीए कृष्णन अंग्रेज़ी और तमिल के लेखक हैं।)

डिजिटल मंचों पर निरंतर प्रसारित हो रहा अदृश्य राजनीतिक एजेंडा

डॉ. शैलेश शुक्ला

लोकतंत्र की आत्मा उस दिन कुछ और कमज़ोर हो जाती है जब एक नागरिक यह सोचकर अपनी राय बनाता है कि वह स्वतंत्र रूप से सोच रहा है, जबकि वास्तव में उसके विचारों को धीरे-धीरे, अदृश्य रूप से, और सुनियोजित तरीके से ढाला जा रहा होता है। डिजिटल युग में राजनीतिक प्रचार का सबसे खतरनाक रूप वह नहीं है जो आँखों के सामने दिखता है, बल्कि वह है जो दिखता ही नहीं — जो एल्गोरिदम की परतों में, डेटा विश्लेषण की सुरंगों में, और व्यक्तिगत डिजिटल अनुभव की बारीकियों में छिपा होता है। यह अदृश्य राजनीतिक एजेंडा आज के समय में सबसे प्रभावशाली और सबसे कम समझा गया राजनीतिक औज़ार बन चुका है।

फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर (अब एक्स), और इंस्टाग्राम जैसे मंच अपने उपयोगकर्ताओं को केवल सामग्री दिखाने का काम नहीं करते — वे उनके लिए एक विशेष वास्तविकता का निर्माण करते हैं। यह वास्तविकता उनके पिछले व्यवहार, उनकी पसंद-नापसंद, उनके मित्र-मंडल और उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर तैयार की जाती है। इस प्रक्रिया को 'फिल्टर बबल' कहते हैं — एक ऐसा बुलबुला जिसमें उपयोगकर्ता केवल वही देखता है जो उसकी मौजूदा सोच को मज़बूत करे। इस अवधारणा को 2011 में इंटरनेट कार्यकर्ता एली पेरिसर ने अपनी पुस्तक 'द फिल्टर बबल' में विस्तार से समझाया था, और तब से लेकर आज तक यह समस्या कई गुना विकराल हो चुकी है।

2016 का अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव इस अदृश्य राजनीतिक एजेंडे का सबसे चर्चित उदाहरण बना। कैम्ब्रिज एनालिटिका नामक कंपनी ने फेसबुक से 87 मिलियन उपयोगकर्ताओं का डेटा बिना उनकी सहमति के प्राप्त किया और इसका उपयोग राजनीतिक विज्ञापनों को इस प्रकार लक्षित करने के लिए किया कि मतदाताओं की मनोवैज्ञानिक कमज़ोरियों को भुनाया जा सके। यह तकनीक 'साइकोग्राफिक टार्गेटिंग' कहलाती है, जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व प्रकार — जैसे कि वह कितना संवेदनशील है, कितना खुलेपन वाला है, कितना न्यूरोटिक है — के आधार पर राजनीतिक संदेश तैयार किए जाते हैं। इस घोटाले ने दुनिया को पहली बार यह समझाया कि डेटा केवल एक तकनीकी उत्पाद नहीं है — यह राजनीतिक शक्ति का एक नया स्रोत है।

भारत के संदर्भ में यह प्रश्न और भी गंभीर हो जाता है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 2024 तक लगभग 900 मिलियन को पार कर चुकी है और देश में व्हाट्सएप का उपयोग करने वालों की संख्या 500 मिलियन से अधिक है। व्हाट्सएप, जो एन्क्रिप्टेड और बंद समूहों में काम करता है, भारतीय राजनीति में सूचना प्रसार का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन चुका है। इन समूहों में जो राजनीतिक सामग्री प्रसारित होती है — चाहे वह किसी नेता की छवि को उज्ज्वल करने वाली हो या किसी प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुँचाने वाली — वह किसी एल्गोरिदमिक जाँच से नहीं गुज़रती, न ही किसी तथ्य-परीक्षण से। यह पूरी तरह मानव-संचालित प्रचार तंत्र है, लेकिन इसकी पहुँच और प्रभाव किसी भी टेलीविज़न चैनल से अधिक हो सकती है।

डिजिटल मंचों पर अदृश्य राजनीतिक एजेंडे का एक और पहलू 'एस्ट्रोटर्फिंग' है — यानी ऐसे नकली जनमत का निर्माण करना जो वास्तविक लगे। इसमें हज़ारों बॉट खाते एक साथ किसी विशेष हैशटैग को ट्रेंड करा देते हैं, किसी नेता के बयान को 'वायरल' बना देते हैं, या किसी विपक्षी विचार को 'ट्रोल' करके दबा देते हैं। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के इंटरनेट इंस्टीट्यूट ने 2019 में 'कम्प्यूटेशनल प्रोपेगेंडा' पर एक व्यापक

शोध प्रकाशित किया जिसमें बताया गया कि 70 देशों में सरकारों और राजनीतिक दलों द्वारा सोशल मीडिया पर राय को प्रभावित करने के लिए संगठित अभियान चलाए जा रहे हैं। भारत भी उन देशों में शामिल था।

इस संदर्भ में 'इको चेंबर' की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब कोई व्यक्ति बार-बार एक ही प्रकार की राजनीतिक सामग्री देखता है, तो उसका मस्तिष्क उस दृष्टिकोण को ही 'सामान्य' और 'सर्वमान्य' मानने लगता है। विरोधी विचारों के प्रति सहिष्णुता घटती है और अपनी राय पर कट्टरता बढ़ती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति की आलोचनात्मक सोच को कुंद करती है। मनोविज्ञान में इसे 'कन्फर्मेशन बायस' कहते हैं — अपनी पहले से बनी धारणाओं के अनुकूल सूचनाओं को स्वीकार करने और विरोधी सूचनाओं को नकारने की प्रवृत्ति। डिजिटल एल्गोरिदम इस मानवीय कमज़ोरी को न केवल बनाए रखते हैं, बल्कि इसे और गहरा करते हैं, क्योंकि उनका मूल उद्देश्य उपयोगकर्ता को अधिक से अधिक समय तक मंच पर बनाए रखना है।

यूट्यूब का 'रेकमेंडेशन एल्गोरिदम' इस संदर्भ में विशेष रूप से चर्चित रहा है। गूगल के एक पूर्व इंजीनियर गिलौम चास्लोट ने 2019 में बताया था कि यूट्यूब का एल्गोरिदम उपयोगकर्ताओं को धीरे-धीरे अधिक उत्तेजक, अधिक चरमपंथी और अधिक विभाजनकारी सामग्री की ओर ले जाता है क्योंकि ऐसी सामग्री अधिक 'एंगेजमेंट' उत्पन्न करती है। इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति जो किसी सामान्य राजनीतिक भाषण से शुरुआत करता है, वह धीरे-धीरे उग्र राष्ट्रवादी या कट्टरपंथी सामग्री तक पहुँच सकता है — और यह सब बिना किसी स्पष्ट 'एजेंडे' के, केवल एल्गोरिदम की तर्क-रहित भूख के कारण।

माइक्रोटार्गेटिंग इस अदृश्य एजेंडे का सबसे परिष्कृत और खतरनाक रूप है। इसमें राजनीतिक दल विभिन्न मतदाता समूहों को उनकी विशेषताओं के अनुसार अलग-अलग संदेश भेजते हैं — और इन संदेशों का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं होता। एक ही नेता एक समुदाय को कुछ और बता रहा होता है और दूसरे समुदाय को कुछ और — और चूँकि यह विज्ञापन टेलीविज़न या समाचार पत्रों में नहीं आते, इसलिए कोई व्यापक जन-जाँच भी नहीं होती। 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन दोनों दलों ने फेसबुक पर लाखों अलग-अलग विज्ञापन संस्करण चलाए। प्रोपब्लिका की रिपोर्ट के अनुसार, फेसबुक पर ऐसे राजनीतिक विज्ञापन भी दिखाए गए जो केवल एक विशेष नस्लीय समुदाय को निशाना बनाते थे और उन्हें वोट न करने के लिए प्रेरित करते थे।

भारत में भी माइक्रोटार्गेटिंग का व्यापक उपयोग हो रहा है। 2019 के लोकसभा चुनाव में आईटी सेल्स और सोशल मीडिया प्रबंधन कंपनियों की भूमिका पर कई पत्रकारीय जाँचें हुईं। 'द हिंदू' और 'ऑल्ट न्यूज़' जैसी संस्थाओं ने दस्तावेज़ किया कि किस प्रकार व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से लक्षित राजनीतिक सामग्री फैलाई गई। एक अनुमान के अनुसार, 2019 के चुनाव में राजनीतिक दलों ने डिजिटल प्रचार पर लगभग 50 अरब रुपये खर्च किए — और इसका अधिकांश हिस्सा उन प्लेटफॉर्मों पर गया जिनकी कोई व्यापक नियामक निगरानी नहीं है।

नदियो का ननिहाल केन्द्रीय राज्यमंत्री को सप्रेम भेट

बैतूल जिले के लेखक पत्रकार डॉ. रामकिशोर दयाराम पंवार रोंढ़ावाला की सातवीं पुस्तक प्रकाशित

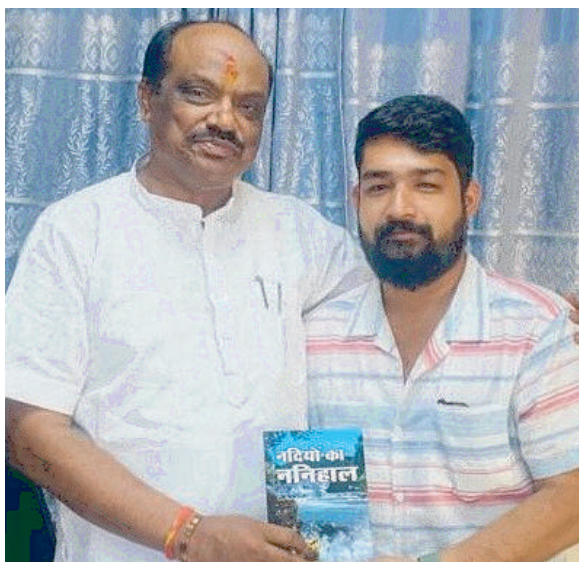

बैतूल। जिला मुख्यालय से लगे ग्राम रोढा में जन्मे 62 वर्षीय निःशक्तलेखक एवं पत्रकार रामकिशोर दयाराम पंवार रोंढ़ावाला जिले के एक मात्र ऐसे लेखक है जिनकी सातवीं पुस्तक नदियो का ननिहाल प्रकाशित हो गई है। ब्राइट एम पी पब्लिशर फरीदाबाद हरियाणा द्वारा प्रकाशित पुस्तक नदियो का ननिहाल सतपुड़ा की हरि भरी वादियो में बसे मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले से निकलने वाली एवं जिले से बहने वाली नदियो पर आधारित है। पुस्तक में नदी एवं नारी की स्वच्छता एवं निर्मलता को आधार मान कर लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत नदियो का देश है उसी देश में मध्यप्रदेश नदियो का मायका प्रदेश है लेकिन बैतूल जिला नदियो का ननिहाल है जहां पर एक नहीं अनेक नदियां निकलती है। लेखक ने बैतूल जिले की नदियो की जानकारी संकलित करने का प्रयास किया है लेखक के अनुसार उनके पास जिले के उतर वन मंडल की जानकारी प्राप्त है जिसके अनुसार उतर वन मंडल के बैतूल, सारणी, रानीपुर, शाहपुर - भौरा वन परिक्षेत्र में 256 से अधिक बरसाती, बारहमासी नदियां, नाले, झरने, एवं अन्य जल स्त्रोत है। लेखक ने जिले की तीन पवित्र नदियो का उल्लेख किया है जिनकी परिक्रमा या यात्रा की जाती है जिसमें ताप्ती, पूर्णा, बेल का जिक्र है। जिले की झापल पहाड़ी सणे निकलने वाली सात नदियो का भी सचित्र विवरण पुस्तक में पढने को मिल जाएगा। बैतूल जिले के इतिहासिक एवं गौरवशाली तथा पौराणिक इतिहास तथा नदियो से जुड़ी कहानी किस्सो को भी प्रकाशित किया है। डॉ. रामकिशोर दयाराम पंवार की अभी तक छै पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है जिसमें बैतूलवी पत्रकारिता, पुस्तक मेरा बेतूल, मेरे बाबूजी, अजब गांव की गजब दास्तां, काला गुलाब, सहकारिता का सुहाना सफर प्रकाशित हो चुकी है। सोशल मीडिया एवं आन लाइन नेटवर्किंग साइट फिलीपकार्ट, अमेजान जैसे प्लेट फार्म पर भी लेखक की पुस्तक उपलब्ध है। 300 सौ रूपये मूल्य वाली इस पुस्तक की प्रथम प्रति पुण्य सलीला मां सूर्यपुत्री ताप्ती के श्री चरणो में भेट कर अन्य प्रति उनकी पूज्यनीय माताजी श्रीमती कसिया बाई दयाराम पंवार को सप्रेम भेंट कर उनका आर्शिवाद प्राप्त किया । पुस्तक की दूसरी प्रति श्री पंवार की सुपौत्री कुमारी तृप्ति पंवार को तथा तीसरी प्रति बैतूल जिले के लोकप्रिय सासंद एवं भारत सरकार के जन जातिय मामलो के राज्यमंत्री श्री दुर्गादास उइके को तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं बैतूल से विधायक हेमंत विजय कुमार खण्डेलवाल को सप्रेम भेट की। श्री पंवार की चार पुस्तके अभी वर्तमान में प्रकाशनार्थ के लिए प्रकाशको के पास पहुंच चुकी है। जिसमें पंचायती राज को समर्पित मेरा गांव, मेरी सरकार, औद्योगिक नगरी मिनी इंडिया कहे जाने वाले पाथाखेड़ा - सारणी के हालात पर लिखी गई पुस्तक उजड़ा गुलशन रोता माली, पुण्य सलिला मां सूर्यपुत्री ताप्ती की परिक्रमा पर लिखी पुस्तक तापी ताप हरोए तथा मेरी आत्मकथा 2026 - 27 में छप कर आ जाएगी।

चित्र में लेखक डॉ. रामकिशोर पंवार के सुपुत्र मोहित पंवार श्री उइके को पुस्तक नदियो का ननिहाल की प्रति सप्रेम भेट करते हुए।

भागवत कृपा धाम आश्रम में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा 07 अप्रैल से

प्रख्यात भागवताचार्य जगदीश चन्द्र शास्त्री महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा कराएंगे श्रीमद्भागवत कथा की अमृत वर्षा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। चैतन्य विहार फेस-1/पापड़ी चौराहा स्थित भागवत कृपा धाम आश्रम में श्रीवल्लभाचार्य जी सेवा प्रचार ट्रस्ट, वृन्दावन के द्वारा महाप्रभु वल्लभाचार्य महाराज के 549वें प्राकट्य महोत्सव के 34 वर्ष पूर्ण होने के पावन उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ का आयोजन 07 से 13 अप्रैल 2026 पर्यंत अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जा रहा है।

जानकारी देते हुए महोत्सव के व्यवस्थापक दीपक शर्मा, गोविन्द शर्मा एवं अनुराग शर्मा ने बताया है कि कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविख्यात भागवतोपासक जगदीश चन्द्र शास्त्री महाराज अपनी सुमधुर वाणी में अपराह्न 04 से सायं 7 बजे तक देश-विदेश से आए असंख्य भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा का रसास्वादन कराएंगे। जिसमें सभी भक्त-श्रद्धालु सादर आमंत्रित हैं।

संत रामपाल जी महाराज के मार्गदर्शन में रामसरा गांव में चलाया विशाल सफाई अभियान

परिवहन विशेष न्यूज

संगरूर, (जगसीर सिंह) - संत रामपाल जी महाराज के मार्गदर्शन में फाजिल्का जिले की अबोहर तहसील के रामसरा गांव में आज रामसरा गांव में बड़े पैमाने पर सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में सेवादारों ने हिस्सा लिया और गांव की सफाई सुनिश्चित की। इस समय सेवादारों ने गांव की गलियों, सड़कों, ड्रेनेज सिस्टम और सार्वजनिक जगहों की खास तौर पर सफाई की। इसके साथ ही गांव वालों को सफाई के बारे में जागरूक किया गया और अपने आसपास साफ-सफाई का माहौल बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। सफाई अभियान के दौरान गांव के लोगों ने भी बड़े उत्साह से हिस्सा लिया और इस पहल को समाज के लिए बहुत फायदेमंद बताया। पंचायत सदस्य विक्रम कड़वासरा सरपंच, चौधरी अमन कड़वासरा, विनोद कड़वासरा समाजसेवी ने कहा कि ऐसे अभियान गांव में सफाई के साथ-साथ एकता और सेवा भावना को मजबूत करते हैं। इस मौके पर संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाए जा रहे समाज कल्याण के कामों की बहुत सराहना की गई। उनके फॉलोअर्स अन्नपूर्णा कैंपेन के तहत ज़रूरतमंद परिवारों को मुफ़्त राशन की मदद दे रहे हैं, साथ ही नशाखोरी, दहेज प्रथा और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ़ जागरूकता फैला रहे हैं, जिससे समाज में अच्छे बदलाव आ रहे हैं। इस समय, उन्होंने गांव रामसरा की पंचायत और गांव के गणमान्य लोगों डॉ. जेपी वर्मा, विजेंद्र राठौर, भीम सेन पंचायत मेंबर, संदीप कड़वासरा, संत रामपाल जी महाराज और सेवादारों का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस पहल से गांव की इमेज बेहतर हुई है और लोगों में सफ़ाई के प्रति एक नई भावना पैदा हुई है। उन्होंने ऐसे सेवा कैंपेन आगे भी जारी रखने की अपील की। इस सफ़ाई अभियान ने साबित कर दिया कि जब सामाजिक संगठन और गांव की पंचायत मिलकर काम करते हैं, तो बड़े से बड़े लक्ष्य भी आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। फाजिल्का जिले की अबोहर तहसील के रामसरा गांव में आज संत रामपाल जी महाराज के मार्गदर्शन में बड़े पैमाने पर सफाई अभियान चलाया गया। यह अभियान गांव की पंचायत की मांग पर चलाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में सेवादारों ने हिस्सा लिया और गांव की सफाई सुनिश्चित की। इस मौके पर सेवादारों ने गांव की गलियों, सड़कों, ड्रेनेज सिस्टम और सार्वजनिक जगहों की खास तौर पर सफाई की। इसके साथ ही गांव वालों को सफाई के बारे में जागरूक किया गया और अपने आसपास साफ-सफाई का माहौल बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। सफाई अभियान के दौरान गांव के लोगों ने भी बड़े उत्साह से हिस्सा लिया और इस पहल को समाज के लिए बहुत फायदेमंद बताया। पंचायत सदस्य विक्रम कड़वासरा सरपंच, चौधरी अमन कड़वासरा, विनोद कड़वासरा समाजसेवी ने कहा कि ऐसे अभियान गांव में सफाई के साथ-साथ एकता और सेवा भावना को मजबूत करते हैं। इस मौके पर संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाए जा रहे समाज कल्याण के कामों की बहुत सराहना की गई। उनके फॉलोअर्स अन्नपूर्णा कैंपेन के तहत ज़रूरतमंद परिवारों को मुफ़्त राशन की मदद दे रहे हैं, साथ ही नशाखोरी, दहेज प्रथा और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ़ जागरूकता फैला रहे हैं, जिससे समाज में अच्छे बदलाव आ रहे हैं। इस समय, उन्होंने गांव रामसरा की पंचायत और गांव के गणमान्य लोगों डॉ. जेपी वर्मा, विजेंद्र राठौर, भीम सेन पंचायत मेंबर, संदीप कड़वासरा, संत रामपाल जी महाराज और सेवादारों का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस पहल से गांव की इमेज बेहतर हुई है और लोगों में सफ़ाई के प्रति एक नई भावना पैदा हुई है। उन्होंने ऐसे सेवा कैंपेन आगे भी जारी रखने की अपील की। इस सफ़ाई अभियान ने साबित कर दिया कि जब सामाजिक संगठन और गांव की पंचायत मिलकर काम करते हैं, तो बड़े से बड़े लक्ष्य भी आसानी से हासिल किए जा सकते हैं।

पीएनबी सोल्जराथॉन 2026 की सहभागिता

नवदीप सिंह

आज दिनांक 05 अप्रैल 2026 को पीएनबी सोल्जराथॉन 2026 का आयोजन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में पंजाब नेशनल बैंक द्वारा किया गया। इस रन में निदेशालय नागरिक सुरक्षा, पूर्वी जिला, डिवीजन 200, शकरपुर के श्री अवतार सिंह ने सहभागिता की।

प्रतिभागी ने 10 किलोमीटर की दौड़ सफलतापूर्वक पूर्ण कर पीएनबी सोल्जराथॉन अचीवर मेडल अर्जित किया। इस अवसर पर लगभग पाँच हजार युवा धावक-धाविकाओं सहित अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के रनर्स ने भाग लिया।

दौड़ने से हिम्मत, जज़्बा, मानसिक एकाग्रता, मेडिकल फिटनेस तथा कुछ कर गुजरने की क्षमता विकसित होती है। नियमित दौड़ना शरीर को स्वस्थ रखने, हृदय को मजबूत बनाने, मधुमेह से बचाव करने तथा न्यूरोलॉजिकल विकारों के जोखिम को कम करने में सहायक सिद्ध होता है।

इस प्रकार ऐसे आयोजनों से युवाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ती है और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

प्रधानमंत्री के प्रिंसिपल सेक्रेटरी ने ग्लोबल स्किल्स सेंटर का दौरा किया

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : प्रधानमंत्री के प्रिंसिपल सेक्रेटरी शक्तिकांत दास ने भुवनेश्वर के मंचेश्वर में वर्ल्ड स्किल्स सेंटर का दौरा किया। उन्होंने यहां कई स्टेट-ऑफ-द-आर्ट लैब्स का दौरा किया। उन्होंने यह जानकर खुशी जताई कि यह सेंटर स्टूडेंट्स के स्किल डेवलपमेंट में अहम भूमिका निभा रहा है।वर्ल्ड स्किल्स सेंटर में 'स्कूल ऑफ़ इंजीनियरिंग' और 'स्कूल ऑफ़ सर्विसेज़' डिपार्टमेंट के तहत युवाओं को इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग देने के लिए कई स्टेट-ऑफ़-द-आर्ट लैब हैं। इनमें से, श्री दास ने वर्टिकल ट्रांसपोर्टेशन, एयर कंडीशनिंग और रेफ्रिजरेशन, ब्यूटी एंड वेलनेस और स्कूल ऑफ़ हॉस्पिटैलिटी वगैरह डिपार्टमेंट का दौरा किया। ओडिशा की चीफ सेक्रेटरी अनु गर्ग और स्किल डेवलपमेंट और टेक्निकल एजुकेशन कमिश्नर और राज्य के सेक्रेटरी भूपेंद्र सिंह पुनिया इस दौरे के दौरान खास तौर पर मौजूद थे।इस मौके पर वर्ल्ड स्किल्स सेंटर में एक मीटिंग हुई, जिसमें प्रधानमंत्री के प्रिंसिपल सेक्रेटरी शामिल हुए। मीटिंग में स्टूडेंट्स को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड के हिसाब से ट्रेनिंग देकर आने वाले कल के इंडस्ट्रियल सेक्टर के लिए स्किल्ड ह्यूमन रिसोर्स बनाने पर फोकस किया गया। इसी तरह, सरकार, इंडस्ट्रियल इंस्टीट्यूशन और अलग-अलग स्किल डेवलपमेंट सेंटर के बीच कोऑर्डिनेशन बनाए रखकर स्किल डेवलपमेंट सेक्टर को नई ऊंचाइयों पर ले जाने पर भी चर्चा हुई।

इस प्रोग्राम में वर्ल्ड स्किल्स सेंटर की चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर रश्मि रंजन महापात्रा, डिपार्टमेंटल एडिशनल सेक्रेटरी और वर्ल्ड स्किल्स सेंटर के CEO पिनाकी पटनायक और चेयरमैन डॉ. शुभांग किशोर दास खास तौर पर मौजूद थे।

राष्ट्रवादी विचारों से घबराहट क्यों? अंबेडकर जी की राष्ट्रवादी पुस्तकों को पढ़ने से जागती है देशभक्ति की भावना: वरिष्ठ समाजसेवी

जो व्यक्ति 'पाकिस्तान और द पार्टिशन ऑफ इंडिया' तथा 'बी.आर. अंबेडकरः थॉट्स ऑन पाकिस्तान' जैसी पुस्तकों को गंभीरता से पढ़ता है, उसके भीतर स्वतः ही राष्ट्र के प्रति समर्थन और समर्पण की भावना जागृत हो जाती है।

उत्तरप्रदेश, संजय साग़र सिंह। विश्व ज्ञान रत्न डॉ अंबेडकर जी की 135वी जयंती की शुभकामनायें देते हुए वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. उमेश शर्मा ने राष्ट्रवादी सोच और ऐतिहासिक साहित्य की भूमिका पर ज़ोर दिया है। उनका कहना है कि जो व्यक्ति 'पाकिस्तान और द पार्टिशन ऑफ इंडिया' तथा 'बी.आर. अंबेडकरः थॉट्स ऑन पाकिस्तान' जैसी पुस्तकों को गंभीरता से पढ़ता है, उसके भीतर स्वतः ही राष्ट्र के प्रति समर्थन और समर्पण की भावना जागृत हो जाती है।

उन्होंने बताया कि विश्व ज्ञान रत्न डॉ अंबेडकर जी द्वारा लिखी गई ये पुस्तकें न केवल इतिहास के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती हैं, बल्कि बंगाल, हैदराबाद और विभाजन के दौर में हुए दंगों की सच्चाई से भी आम लोगों को परिचित कराती हैं। उन्होंने बताया कि इन सच्चाइयों से असहज होने वाले कुछ तत्वों ने समय-समय पर बाबा साहेब के इन राष्ट्रवादी विचारों को दबाने का प्रयास किया। इतिहास में कई बार ऐसा हुआ कि कड़वी सच्चाई सामने न आए, इसलिए कई पुस्तकों को नष्ट तक किया गया।

उन्होंने यह भी कहा कि पूर्व की सरकारों के कुछ नेता इन विषयों पर खुलकर बोलने से बचते रहे, जिससे भ्रम और असमंजस की स्थिति बनी रही। यही कारण है कि आज भी कुछ समूह राष्ट्रवादी प्रतीकों, मूर्तियों और विचारों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे बाबा साहब के द्वारा लिखी राष्ट्रवादी किताबों को स्वयं पढ़ें और समझें, ताकि किसी भी प्रकार के भ्रम से बचा जा सके और देश के प्रति जागरूकता एवं जिम्मेदारी की भावना मजबूत हो।

उन्होंने आग्रह किया कि उनके चिंतन और विचारों में देश सबसे ऊपर हैं। डॉ बाबा साहेब का जीवन और उनके राष्ट्रवादी विचार आज भी समाज को दिशा देने वाले हैं। उनके हम हमेशा क़र्ज़दार रहेंगे, डॉ बाबा साहेब का जीवन संघर्ष, त्याग और देश के लिए समर्पण और राष्ट्र वादी विचारों का प्रतीक है। उनकी जयंती केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को आत्मसात करने का अवसर है।

आखिर में उन्होंने कहा कि उनके राष्ट्रीवादी विचारों पर आधारित पुस्तकों को स्वयं पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें, ताकि ज्ञान और जागरूकता का प्रसार घर - घर में हो सके और ये महत्वपूर्ण सन्देश देश-विदेश और प्रदेश भर में बड़े स्तर जाये। उनके चिंतन और राष्ट्रवादी विचारों में देश सबसे ऊपर हैं - उनके राष्ट्रीवादी विचारों को अपनाकर ही देश को प्रगति और विकास के पथ पर आगे बढ़ाया जा सकता है।

रेलवे ने सेना के वीर योद्धाओं को बड़ा तोहफा दिया है. एक उचित सम्मान देने का काम किया है.

पिंकी कुंडू

दरअसल रेलवे अब से वीरता पुरस्कार से सम्मानित हर जवान चाहे वायुसेना से हों, या नौसेना या फिर गैलेंट्री अवॉर्ड पाने वाले जवान , सभी को 2 AC में जीवन भर यात्रा फ्री कर दी है. रेलवे ने सेना के जवानों को यह सम्मान देने का काम किया है. जो अपने देश के लिए अपने परिवार से दूर रहकर गाँव-शहर, माता-पिता से दूर रहकर वतन की सेवा करते हैं उन्हें यह सम्मान दिया गया है.

जय हिन्द।

गम्हारिया में 'प्रोजेक्ट भारत' द्वारा सम्मान समारोह के साथ नेक पहल

प्रत्येक गांव में पांच सदस्य सामाजिक , आर्थिक उत्थान पर अब काम करेंगे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, सरायकेला-खरसावां जिले के गम्हारिया स्थित कम्युनिटी हॉल में कोल्हान के तीनों जिलों की ओर से आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा 'प्रोजेक्ट भारत' के अंतर्गत एक भव्य प्रतिनिधि सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य लोग उपस्थित हुए और ग्रामीण विकास को लेकर महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर्ट ऑफ लिविंग के स्वामी शिवानन्द, चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष मानव केडिया, आर्ट ऑफ लिविंग के एनएवी सदस्य अमित चटर्जी, छोटा गम्हारिया, रापचा और कार्लजोरी की मुखिया, रीता मिश्रा तथा आईसीएम सोनाराम महतो उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का स्वागत पारंपरिक तरीके से किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने 'प्रोजेक्ट भारत' के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आर्ट ऑफ लिविंग का लक्ष्य गांवों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है। इसके तहत प्रत्येक गांव में 5 प्रतिनिधियों का चयन किया जाएगा, जो गांव में ही रहकर लोगों के सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए कार्य करेंगे। यह प्रतिनिधि गांव की समस्याओं को समझकर उनके समाधान की दिशा में पहल करेंगे और लोगों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

साथ ही यह भी बताया गया कि आर्ट ऑफ लिविंग केवल जागरूकता तक सीमित नहीं है, बल्कि कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से कार्य करती है। संस्था युवाओं और ग्रामीणों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के योग्य बनाती है। इसके अलावा स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए भी लोगों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है, ताकि वे स्वयं का रोजगार शुरू कर आर्थिक रूप से मजबूत बन सकें।

कार्यक्रम में यह भी कहा गया कि इस पहल के माध्यम से गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और नैतिक मूल्यों को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही ग्रामीणों को जागरूक कर उन्हें संगठित रूप से विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

समारोह के अंत में सभी प्रतिनिधियों को सम्मानित कर उनके उज्ज्वल भविष्य और सफल कार्य के लिए शुभकामनाएं दी गईं। यह कार्यक्रम कोल्हान क्षेत्र में ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण और सराहनीय पहल माना जा रहा है।

जेनेरिक से नवाचार तक का सफर

(सस्ती दवाओं के निर्यात में अग्रणी, पर सक्रिय संघटकों के लिए आयात पर निर्भरता)

— डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत आज वैश्विक स्तर पर सस्ती दवाओं के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ताओं में से एक बन चुका है। "विश्व की फार्मेसी" के रूप में उसकी पहचान केवल एक उपमा नहीं, बल्कि उसकी उत्पादन क्षमता, निर्यात विस्तार और वैश्विक जनस्वास्थ्य में उसके योगदान का सशक्त प्रमाण है। वर्ष 2025-26 तक भारतीय औषधि बाजार 50 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर चुका है और वैश्विक जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति में उसका योगदान 20 प्रतिशत से अधिक है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी भारतीय कंपनियां लगभग 40 प्रतिशत जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति करती हैं, जबकि अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता में भारत की भूमिका अत्यंत निर्णायक है। यह उपलब्धि 1970 के दशक में पेटेंट कानूनों में हुए परिवर्तन का परिणाम है, जब भारत ने प्रक्रिया पेटेंट प्रणाली को अपनाकर घरेलू उद्योग को सशक्त किया और सस्ती दवाओं के उत्पादन का मार्ग प्रशस्त किया।

किन्तु इस चमकदार उपलब्धि के पीछे एक गहरा विरोधाभास भी छिपा हुआ है। भारत जहां एक ओर तैयार दवाओं का प्रमुख निर्यातक है, वहीं दूसरी ओर उनके निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल और सक्रिय औषधीय संघटकों के लिए भारी मात्रा में आयात पर निर्भर है। अनुमानतः भारत अपनी आवश्यकता का लगभग 60 से 70 प्रतिशत सक्रिय औषधीय संघटक विदेशों से आयात करता है, जिसमें प्रमुख हिस्सा चीन से आता है। पेनिसिलिन जी, क्लैवुलैनिक अम्ल और पैरासिटामोल जैसे महत्वपूर्ण संघटकों के मामले में यह निर्भरता 80 प्रतिशत से भी अधिक है। यह स्थिति केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता के लिए भी गंभीर चिंता का विषय है।

कोविड-19 महामारी ने इस निर्भरता की वास्तविकता को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया। चीन में लॉकडाउन के कारण आपूर्ति बाधित होते ही भारत में दवा उत्पादन प्रभावित हुआ। अनेक औषधि निर्माण इकाइयों को उत्पादन घटाना पड़ा और कुछ को अस्थायी रूप से बंद करना पड़ा। इससे यह स्पष्ट हो गया कि कच्चे माल की आपूर्ति में व्यवधान भारत की औषधि उत्पादन क्षमता को तुरंत प्रभावित कर सकता है। इस अनुभव ने आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया।

इसी संदर्भ में सरकार ने उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना के माध्यम से लगभग 16,000 करोड़ रुपये के निवेश की घोषणा की, जिसका उद्देश्य घरेलू स्तर पर सक्रिय औषधीय संघटकों के उत्पादन को बढ़ावा देना है। यद्यपि इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है, फिर भी अनेक संरचनात्मक समस्याएं अब भी बनी हुई हैं। उच्च उत्पादन लागत, तकनीकी सीमाएं तथा कठोर पर्यावरणीय नियमों के कारण कई उत्पादन इकाइयां बंद हो चुकी हैं, जिससे घरेलू उत्पादन क्षमता सीमित हो गई है।

नियामक ढांचे की कमजोरी भी इस क्षेत्र की एक प्रमुख चुनौती है। केंद्रीय और राज्य स्तर पर औषधि नियंत्रण संस्थाओं में संसाधनों और प्रशिक्षित मानवबल की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। गुणवत्ता नियंत्रण में खामियों के कारण कई भारतीय औषधि निर्माण इकाइयों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना का सामना करना पड़ा है। कुछ मामलों में विदेशी नियामक संस्थाओं द्वारा आयात प्रतिबंध भी लगाए गए हैं, जिनका कारण निर्माण प्रक्रियाओं में त्रुटियां और गुणवत्ता मानकों का उल्लंघन रहा है। इससे भारत की वैश्विक साख प्रभावित होती है और निर्यात संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, नकली दवाओं का बढ़ता बाजार भी एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है। यह न केवल उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए खतरा है, बल्कि औषधि उद्योग की विश्वसनीयता को भी कमजोर करता है। मूल्य नियंत्रण नीतियों के कारण कंपनियों की लाभप्रदता सीमित होती है, जिससे वे अनुसंधान एवं विकास में पर्याप्त निवेश नहीं कर पातीं और मुख्यतः जेनेरिक उत्पादन तक ही सीमित रह जाती हैं।

अनुसंधान एवं विकास में निवेश की कमी भारतीय औषधि क्षेत्र की एक बड़ी कमजोरी है। जहां वैश्विक औषधि कंपनियां अपने राजस्व का बड़ा हिस्सा अनुसंधान पर खर्च करती हैं, वहीं भारत में यह अनुपात अपेक्षाकृत कम है। इसका परिणाम यह है कि भारत नवाचार आधारित दवाओं, जैविक औषधियों और व्यक्तिगत चिकित्सा जैसे उभरते क्षेत्रों में पीछे रह जाता है। भविष्य में इन क्षेत्रों का महत्व तेजी से बढ़ने वाला है, और यदि भारत ने समय रहते इस दिशा में निवेश नहीं बढ़ाया, तो वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकता है।

कौशल विकास की कमी भी एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में सामने आती है। आधुनिक औषधि निर्माण, जैव प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुसंधान के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता है, जो वर्तमान में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। शिक्षा संस्थानों और उद्योग के बीच समुचित समन्वय के अभाव में छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता, जिससे नवाचार की गति प्रभावित होती है।

पर्यावरणीय चुनौतियां भी इस क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं। औषधि निर्माण प्रक्रिया ऊर्जा-गहन और प्रदूषणकारी होती है, जिसके कारण पर्यावरणीय मानकों का पालन करना महंगा पड़ता है। इससे उत्पादन लागत बढ़ती है और प्रतिस्पर्धात्मकता घटती है। साथ ही, डिजिटल प्रौद्योगिकी के सीमित उपयोग के कारण आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और गुणवत्ता निगरानी में भी बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक समग्र, संतुलित और दीर्घकालिक रणनीति अपनाना आवश्यक है। सबसे पहले, घरेलू स्तर पर सक्रिय औषधीय संघटकों के उत्पादन को बढ़ावा देना होगा। इसके लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजनाओं का विस्तार तथा औद्योगिक क्लस्टरों का विकास किया जाना चाहिए। छोटे और मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहित करके उन्हें इस क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी के लिए सक्षम बनाना होगा।

दूसरा, अनुसंधान एवं विकास को प्राथमिकता देते हुए सरकार को कर प्रोत्साहन बढ़ाने और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से औषधि खोज प्रक्रिया को अधिक तेज और प्रभावी बनाया जा सकता है।

तीसरा, नियामक सुधारों को लागू करना अत्यंत आवश्यक है। औषधि नियंत्रण संस्थाओं को अधिक संसाधन, तकनीकी क्षमता और स्वायत्तता प्रदान करनी होगी। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से गुणवत्ता निगरानी और पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

कौशल विकास के क्षेत्र में भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा संस्थानों और उद्योग के बीच बेहतर तालमेल स्थापित कर व्यावहारिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना होगा, ताकि एक सक्षम और नवाचारी कार्यबल तैयार किया जा सके।

पर्यावरणीय स्थिरता के लिए हरित प्रौद्योगिकियों को अपनाना भी अनिवार्य है। इससे न केवल पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि उत्पादन लागत में कमी और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि भी संभव होगी।

अंततः, भारत को अपनी भूमिका को केवल सस्ती दवाओं के आपूर्तिकर्ता तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि नवाचार आधारित औषधियों, जैविक उत्पादों और व्यक्तिगत चिकित्सा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। इसके लिए स्पष्ट दृष्टि, सुदृढ़ नीतिगत समर्थन और निरंतर निवेश आवश्यक है। यदि भारत इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान करता है, तो वह न केवल आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक औषधि परिदृश्य में एक अग्रणी शक्ति के रूप में उभरेगा।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

सीमा पार से नशा तस्करी मॉड्यूल से जुड़े दो व्यक्ति 4 .13 किलो हेरोइन सहित अमृतसर से गिरफ्तार

आगे की जांच जारी; और गिरफ्तारियां व बरामदगियां होने की संभावना : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

चंडीगढ़/अमृतसर, 5 अप्रैल (साहिल बेरी) मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को नशा मुक्त राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के दौरान अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने दो आरोपियों को 4.13 किलो हेरोइन सहित गिरफ्तार कर सीमा पार से चल रहे नशा तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। यह जानकारी आज यहां पंजाब के डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डीजीपी) गौरव यादव ने दी। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान कपूरथला, फगवाड़ा के पलाही गेट निवासी आतिश सुमन (22) और अमृतसर के गांव बोपाराय कलां निवासी स्विंदर सिंह उर्फ सुंदरी (28) के रूप में हुई है। डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार किये गये आरोपी यूरोप-आधारित हैंडलरों और जेल में बंद गुर्गों के सीधे संपर्क में थे, जो सीमा पार से नशे की तस्करी और फिर माझा तथा दोआबा क्षेत्रों में इसकी सप्लाई में उक्त मुलजिमों की मदद करते थे। उन्होंने कहा कि दोनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस और आर्म्स एक्ट के तहत पहले भी कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। डीजीपी ने कहा कि पूरे नेटवर्क का भंडाफोड़ करने के लिए मामले में आगे-पीछे के संबंधों की जांच की जा रही है। कार्रवाई के विवरण साझा करते हुए पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि विश्वसनीय सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने आरोपी आतिश सुमन को 220 ग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया था, जिसकी आगे की पूछताछ में 670 ग्राम और हेरोइन बरामद की गई, जिससे उसके पास से कुल 890 ग्राम हेरोइन बरामद हो गयी है। पुलिस कमिश्नर ने बताया कि आतिश सुमन द्वारा किए गए खुलासे के आधार पर पुलिस टीमों ने उसके साथी स्विंदर सिंह उर्फ सुंदरी को भी गिरफ्तार कर लिया, जिसके पास से 3.24 किलो हेरोइन की बड़ी बरामदगी हुई है। उन्होंने आगे कहा कि इस संबंध में आगे की जांच जारी है और आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां तथा बरामदगी होने की संभावना है।

इस संबंध में अमृतसर के पुलिस थाना सुल्तानविंड में एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-बी, 21-सी और 29 के तहत एफआईआर नंबर 64 दिनांक 27-03-2026 दर्ज की गई है।

सरकारी छऊ नृत्य कला केंद्र मे चैत्र पर्व का श्रीगणेश

सरायकेला एसडीओ अभिनव प्रकाश ने अखाड़ा साल में भैरव देव की पूजा की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला , 16 कलाओं की माटी सरायकेला में इस वर्ष चैत्र पर्व का आयोजन हेतु राजा सरायकेला के बाद आज जिला प्रशासन की अगुवाई में भारतीय प्रशासनिक सेवा के युवा अधिकारी एस डी ओ सरायकेला अभिनव प्रकाश ने अखाड़ा साल मे जाकर पूजा अर्चना की। जहां उनके साथ भारी संख्या में कलाकार शामिल रहे । सनद रहे कि बिहार सरकार द्वारा इस अनमोल कला को षड्यंत्र पूर्वक राज महल के मुर्धन्ध जानकारों ,कलाकारों से जबरन छुड़ाकर स्वयं आयोजन अपनी संस्थान के माध्यम से 60 के दशक में आरंभ करती करती है ।जिसके कारण तबका विश्वप्रसिद्ध आज छऊ का आयोजन आज दो तरफा हो चुका है ।

यजमान के तौर पर एस डीओ विधिवत पूजा करने के बाद मिडिया से मुखातिब होते हुए इस सांस्कृति की प्रचार प्रसार हेतु सभी की सहयोग की कामना की । उन्होंने भैरव पूजा को सरायकेला छऊ संस्कृति से जोड़ते हुए गौरवशाली बताया । एस डी ओ ने छऊ नृत्य परंपरा को बढ़ावा देने तथा कलाकारों का मान सम्मान में वृद्धि करने पर बल दिया । इस अवसर पर मार्शल आर्ट के मर्मज्ञ फरिखंडा नर्तक भोला मोहान्ती ने अपनी जोड़ी सुदीप कवि के साथ सांकेतिक वीर भाव नृत्य ढाल तलवार से पेश किए । जो भैरव पूजा पश्चात तलवार संचालन अंश रहता है । मौकों पर संगीत नाटक अकादमी ऐवार्डी ब्रजेन्द्र पट्टनायक,फरिखंडा संचालक भोला मोहान्ती , गजेंद्र मोहान्ती , सुदीप कवि, तपन पट्टनायक, सिद्धू दरोगा,गणेश परिच्छा, गणेश महतो, गणेश मोहान्ती , रूपेश साहु,मुन्ना महाराणा, मनोरंजन साहु, सन्तोष कर, आशिष कर, सुशान्त व सुमित महापात्र आदि समेत कला संरक्षक नेता भी उपस्थित थे।

151 प्रतिभाएं 'कुशवासी रत्न' से सम्मानित, लोक संस्कृति और सेवा का संगम बना कुशवासी महोत्सव

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। 4 अप्रैल। धराधाम इंटरनेशनल, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश) एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय के संयुक्त तत्वावधान में भस्मा में आयोजित प्रथम कुशवासी महोत्सव 2026 के समापन दिवस पर सांस्कृतिक, सामाजिक और जनसेवा से जुड़े विविध कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। दिनभर दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ती रही और पूरा परिसर उत्सवमय वातावरण में सराबोर रहा।

महोत्सव में देश-विदेश से आए कलाकारों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। विशेष रूप से निशा उपाध्याय ने अपनी लोकगायन प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं डॉ .राकेश श्रीवास्तव सहित अन्य कलाकारों ने भी अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। संत सौरभ के जन्मोत्सव पर प्रस्तुत सोहर और बधाई गीतों ने कार्यक्रम को भावनात्मक ऊंचाई प्रदान की।

इस अवसर पर समाज में उत्कृष्ट योगदान देने वाली 151 विभूतियों को 'कुशवासी रत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया, सम्मानित विभूतियों में श्री अभिमन्यु लाल श्रीवास्तव,गोरख लाल, लेखक सर्वेश कांत वर्मा, सुधीर कुमार दुबे,डॉ.निशा अग्रवाल,शिवेश्वर पांडेय, डॉ.गोविंद गुप्ता,डॉ. नीरज गुप्ता,डॉ.रत्नेश कुमार दुबे, सुनीता सिंह सरोवर, बजरंगी सहाय पाण्डेय,नीरज गुप्ता, शशांक पाण्डेय, अजय कुमार, डॉ.पी एन पाण्डेय,मनीष मिश्र, वीरेंद्र मणि त्रिपाठी, डॉ.देवेंद्र कुमार पाठक, आचार्य बृजेश कुमार पाण्डेय,डॉ.प्रशांत मिश्र, सरदार जसपाल सिंह, रीत सिंह,बंजाक्षी यम, एकता उपाध्याय, डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ.नारायण यादव , अनिल कुमार श्रीवास्तव,मुन्ना प्रसाद त्रिपाठी,राजन सिंह सूर्यवंशी,गौतम पाण्डेय सहित अन्य विशिष्ट जनों को सम्मानित किया गया।

विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया।

कार्यक्रम में राजेश त्रिपाठी,चारू चौधरी, सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही। आयोजन के संयोजक सोहार्द शिरोमणि संत डॉ.सौरभ पांडेय एवं उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

महोत्सव के अंतर्गत राजकीय बौद्ध संग्रहालय की आकर्षक प्रदर्शनी ने दर्शकों को इतिहास और संस्कृति से जोड़ते हुए विशेष आकर्षण उत्पन्न किया। वहीं केशव चैरिटेबल हॉस्पिटल द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने स्वास्थ्य जांच कराकर लाभ उठाया।

कुल मिलाकर कुशवासी महोत्सव–2026 का यह आयोजन संस्कृति, कला, सम्मान और जनसेवा का एक अद्भुत संगम बनकर उभरा, जिसने समाज में सकारात्मक ऊर्जा और एकता का संदेश प्रसारित किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023